RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

शुभ दीपावली

हार्दिक शुभकामनाएं

वर्षः 12, अंक-10, हिन्दी (मासिक), अक्टूबर 2025, पृष्ठ 16, मूल्यः 12:50

विश्व बंधुत्व दिवस पर चलाया गया चार दिवसीय रक्तदान महाअभियान

रक्तवीरों ने बनाया रिकार्ड

DONATE BLOOD
SAVE LIFE

88581 यूनिट रक्तदान

ओआरसी में केंद्रीय मंत्री ने किया राष्ट्रीय शुभारंभ

प्रभाग के वरिष्ठ सदस्य प्रेरक वक्ता प्रो. गिरीश भाई व मुख्यालय संयोजक बीके बीरेंद्र भाई ने बताया कि रक्तदान महाअभियान का राष्ट्रीय शुभारंभ 17 अगस्त को गुरुग्राम स्थित ओआरसी में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्ढा द्वारा किया गया। इसके बाद भारत सहित नेपाल में शिविर आयोजित किए गए। शिविरों की मॉनिटरिंग गूगल मैप के जरिए की गई। प्रत्येक रक्तदाता का रजिस्ट्रेशन कर जानकारी अपलोड की गई है। जहां-जहां शिविर आयोजित किए गए हैं वहां से रक्तदाताओं की पूरी जानकारी रिकार्ड के लिए ब्लड बैंक प्रभारी के लेटर हैड पर मंगाई गई है। अगले वर्ष और बड़े स्तर पर अभियान चलाया जाएगा।

शिव आमंत्रण, आबूरोड (राजस्थान)।

लहू शरीर की नसों में दौड़ता वह अमृत है जिसके बिना जीवन संभव नहीं है। रक्तदान ऐसा जीवनदान है जिसका कोई मोल नहीं है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा चलाए गए रक्तदान महाअभियान ने नया रिकार्ड बनाया है। अभियान के तहत भारत वर्ष व नेपाल में रिकार्ड 88581 यूनिट रक्तदान किया गया। इसमें 18 वर्ष के युवाओं से लेकर 60 वर्ष के वरिष्ठ नागरिकों ने उमंग-उत्साह के साथ भाग लिया। ब्रह्माकुमारी बहनों ने भी उमंग-उत्साह दिखाते हुए रक्तदान कर नारी शक्ति को संदेश दिया। बता दें कि पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि (विश्व बंधुत्व दिवस) के उपलक्ष्य में समाजसेवा प्रभाग द्वारा भारत सहित नेपाल में 22 अगस्त से 25 अगस्त के बीच रक्तदान महाअभियान चलाया गया।

- पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में चलाया गया अभियान
- ब्रह्माकुमारी बहनों ने पेश की मिसाल, उत्साह के साथ किया रक्तदान

12044 यूनिट रक्तदान के साथ महाराष्ट्र रहा प्रथम स्थान पर

देशभर में सबसे ज्यादा रक्तदान 12044 यूनिट के साथ महाराष्ट्र प्रथम स्थान पर, 8756 यूनिट के साथ गुजरात दूसरे स्थान पर, 7430 यूनिट रक्तदान के साथ राजस्थान तीसरे स्थान पर रहा। नेपाल में 11916 यूनिट रक्तदान किया गया। देशभर के 1500 शहरों में शिविर आयोजित किए गए।

सामाजिक संगठनों का भी रहा सहयोग

समाज सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार भाई ने बताया कि ब्रह्माकुमारीज़ के समाजसेवा प्रभाग द्वारा चलाए गए रक्तदान महाअभियान में भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, जिला ब्लड बैंक, जिला सरकारी अस्पताल, मेडिकल कॉलेज, रोटरी इंटरनेशनल क्लब, लायंस क्लब, आईएसबीटीआई के सहयोग से रक्तदान शिविर लगाए गए। यह पहला मौका है जबकि ब्रह्माकुमारीज़ संगठन द्वारा इतने बड़े स्तर पर रक्तदान अभियान चलाया गया है।

केंद्रीय मंत्री नड्डा बोले- ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का रक्तदान अभियान मानवता के लिए महान कार्य है

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था मानवता के लिए महान कार्य कर रही है। रक्तदान मानवता का सबसे बड़ा महान कार्य है। रक्तदान अभियान मानवता का बहुत बड़ा कार्य है। संस्था ने आंतरिक परिवर्तन के कार्य को एक वटवृक्ष के समान विशाल रूप दिया है। दादी प्रकाशमणी की पुण्य स्मृति में आयोजित ये कार्यक्रम दादीजी की समाजसेवा एवं प्रखर नेतृत्व की याद दिलाता है। संस्थान द्वारा विश्वभर में व्यक्तिगत रूप से हो रहे आंतरिक परिवर्तन से ही सामाजिक परिवर्तन संभव है। सामाजिक परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन कराता है। ब्रह्माकुमारीज़ मूल्य परक शिक्षा पर विशेष जोर देती है। मूल्य आधारित शिक्षा ही मानव मन को सुख और शांति से भर सकती है। मन की शांति ही चित्त को शांत करती है। **- जेपी नड्डा,** केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा रसायन एवं उर्वरक मंत्री, भारत सरकार

रक्तदान सबसे बड़ा जीवनदान है। बुझती ज्योति को प्रज्वलित करना ही परम पुण्य है। दादी प्रकाशमणी जी की 18वीं पुण्य स्मृति पर भारत व नेपाल में रक्तदान अभियान चलाया गया। इसमें ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने जो उत्साह दिखाया वह काबिलेतारीफ है। दादीजी का जीवन हमारे लिए आदर्श है। उनका प्रत्येक पल मानव सेवा में बीता।

- राजयोगिनी संतोष दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़ व अध्यक्षा, समाजसेवा प्रभाग, आबूरोड, राजस्थान

आबूरोड। मुख्यालय शांतिवन के डायमंड हाल में आयोजित विशाल रक्तदान शिविर में 644 रक्तवीरों ने रक्तदान किया। इसमें 251 यूनिट रक्तदान देशभर से आईं ब्रह्माकुमारी बहनों ने किया।

एक नजर में

76665 यू. भारत में
11916 यू. नेपाल में
1500 शिविर लगाए
04 दिन चला अभियान

इन राज्यों में रक्तदान

राज्य	रक्तदान
महाराष्ट्र	12044
नेपाल	11916
गुजरात	8756
राजस्थान	7430
हरियाणा	6636
कर्नाटक	5516
आंध्र प्रदेश	4775
मध्य प्रदेश	4615
उत्तर प्रदेश	4296
छत्तीसगढ़	3611
दिल्ली	3437
तेलंगाना	3012
पंजाब	1928
ओडिशा	1777
प. बंगाल	1775
बिहार	1232
हिमाचल प्र.	902
केरल	885
झारखंड	825
तमिलनाडु	754
चंडीगढ़	549
उत्तराखंड	542
असम	478
सिक्किम	400
त्रिपुरा	219
दमन-दीव	90
जम्मू-कश्मीर	84
नागालैंड	35
दादरा-नगर हवेली	28
अरुणाचल प्र.	18
अंडमान-निकोबार	16
कुल	88581

दो दिवसीय रॉयल फैमिली स्प्रीचुअल रिट्रीट आयोजित

देशभर से राजा-महाराजाओं के वंशज पहुंचे ब्रह्माकुमारीज़

राजा- महाराजाओं का राजस्थानी पगड़ी पहनाकर किया स्वागत

शिव आमंत्रण, आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में दो दिवसीय रॉयल फैमिली स्प्रीचुअल रिट्रीट आयोजित की गई। इसमें देशभर से राजा-महाराजा घराने के वंशज और रॉयल फैमिली के सदस्यों ने भाग लिया। रिट्रीट में पहुंचे शाही परिवार के सदस्य, राजा- महाराजा ध्यान में मग्न नजर आए। सुबह राजयोग सत्र में सभी ने उत्साह के साथ भाग लिया। सभी सदस्यों का शाही अंदाज में स्वागत किया गया। इसमें वक्ताओं ने एक स्वर में कहा कि भारत अध्यात्म की शक्ति से ही फिर से विश्वगुरु बनेगा। आध्यात्मिकता हमारी धरोहर है। इस दौरान सभी शाहों सदस्यों ने संस्थान के माउंट आबू स्थित पांडव भवन, ज्ञान सरोवर व अन्य परिसरों का भ्रमण भी किया।

दीप प्रज्वलित कर रॉयल फैमिली स्प्रीचुअल रिट्रीट का उद्घाटन करते अतिथि।

महारानी मयूराक्षी सिंह के साथ आए राजस्थान बूंदी के महाराव राजा वंशवर्धन सिंह ने कहा कि मैं दूसरी बार माउंट आबू आया हूं। इसके पहले दो साल पहले ग्लोबल समिट में आना हुआ। यह स्थान सकारात्मक और दिव्य ऊर्जा से भरपूर है। आज सभी को आध्यात्मिक ज्ञान की जरूरत है।

हैदराबाद के आसफ जाही राजवंश के निज़ाम नवाब रौनक यार खान ने कहा कि हैदराबाद में ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रमों में जाने का मौका मिला। संस्थान सामाजिक बदलाव के लिए अच्छा कार्य कर रही है। यहां आकर हर बार नई आध्यात्मिक ऊर्जा की अनुभूति होती है।

उत्तर प्रदेश रामपुर के नवाब सैय्यद मोहम्मद काज़िम अली खान बहादुर ने कहा कि मुझे यहां आने का अवसर मिला, मैं बहुत खुश हूं। रामपुर में भी ब्रह्माकुमारीज़ का केंद्र है। संस्थान द्वारा सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में बहुत ही सराहनीय सेवाएं की जा रही हैं। सभी को आध्यात्मिक ज्ञान की जरूरत है।

ब्रह्माकुमारीज़ के पदाधिकारी बोले-

- ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने कहा कि यह जीवन अमूल्य है। इसे सेवा और परमात्मा की याद में सफल करना है। सबसे पहले हमें यह जानना होगा कि मैं कौन हूं। मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है? वास्तव में हम सभी आत्माएं हैं और यह जीवन महान कार्यों, दिव्य कार्यों के लिए मिला है।
- राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि परमात्मा के घर में आप सभी राजा-महाराजाओं का स्वागत है। यह भगवान का घर, आपका घर है, यहां बार-बार आईए।
- अतिरिक्त महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का मुख्य उद्देश्य है- स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन। जब एक-एक व्यक्ति बदलेगा तो जल्द ही इस धरा पर आदि पुरातन देवी-देवता सनातन संस्कृति होगी, रामराज्य आएगा।
- अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि आज देशभर के राजघराने के परिवार के सदस्यों को यहां देखकर बहुत खुशी हो रही है। आप सभी यहां आते रहें। भयमुक्त जीवन जीना सीखना हो तो ब्रह्माकुमारीज़ में ही सीखा जा सकता है।

जल्द ही भारत स्वर्णिम भारत बनने वाला है

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने कहा कि जल्द ही भारत स्वर्णिम भारत बनने वाला है। भारत ही वह देवभूमि है जहां देवी-देवता राज करते थे। हम ऐसी महान और दिव्य संस्कृति वाले हैं। परमपिता शिव परमात्मा हम सभी मानव आत्माओं को राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा दे रहे हैं। हर आत्मा जीवन में खुशी चाहती है। सभी को खुशी से रहना पसंद होता है। क्योंकि खुशी हमारा नेचुरल स्वभाव है। हमारे कर्म ऐसे हों जिनसे दूसरों को खुशी मिले। हर आत्मा अपने आप में अनोखी और अलग है। आत्मा को भूलने के कारण हम आत्मा के गुणों को भूल गए हैं। बीके डेविड भाई ने म्यूजिक की मनमोहक धुन बजाई।

- राजयोग ध्यान सत्र में प्रेरक वक्ता राजयोगिनी बीके ऊषा दीदी ने कहा कि जीवन में मुख्य तीन महत्वपूर्ण क्रियाएं हैं- सोचना, बोलना और कर्म करना। लेकिन आज यह तीनों अलग-अलग दिशा में हैं। इसलिए जीवन में शांति नहीं है। जब हम अपने अंदर यह जागरूकता पैदा करते हैं कि मेरे मन के विचार, वाणी और कर्म तीनों में सामंजस्य और एकता है तो वहां शांति है।

ज्ञान सरोवर में हुआ शाही परिवारों का स्नेह मिलन

माउंट आबू स्थित ज्ञान सरोवर में सभी शाही परिवारों का स्नेह मिलन हुआ, जिसमें सभी ने अपने-अपने अनुभव सांझा किए। इसके अलावा पांडव भवन और दिलवाड़ा मंदिर के भी दर्शन किए। शाही परिवार के सदस्यों ने कहा कि माउंट आबू की प्राकृतिक सुंदर छटा अद्भुत है। पांडव भवन में बहुत ही शांति की अनुभूति हुई। अतिरिक्त महासचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई, ज्ञान सरोवर की निदेशिका बीके प्रभा दीदी ने सम्मानित किया।

इन राजघरानों के सदस्य भी रहे मौजूद-

राजस्थान के मारवाड़ राजघराने के महाराजा गज सिंह जोधपुर, राजस्थान किशनगढ़ की महारानी मीनाक्षी देवी, मारवाड़ राजघराने की महारानी हेमलता राजे, तेलंगाना के जाटप्रोले संस्थानम के राजा साहब आदित्य लक्ष्मण राव, राजस्थान के भरतपुर की महारानी दिव्या सिंह और युवराज अनिरुद्ध सिंह, भरतपुर हेरिटेज होटल व लक्ष्मी विलास पैलेस के निदेशक राव राजा रघुराज सिंह, ओडिशा की परलाखेमुंडी गंगा राजवंश की महारानी कल्याणी गजपति, हिमाचल प्रदेश सिरमौर की रानी कुंजना सिंह, राजस्थान झालावाड़ के राजा राजेंद्र सिंह राजावत और कुवरानी मरुधर कुंवर, ठिकाना बनिया राजावत, मध्य प्रदेश के दतिया के महाराज लोकेंद्र अरुणादित्य सिंह जूदेव बहादुर, गुजरात दांता के महाराणा साहेब रिद्धिराज सिंह, छोटा उदेपुर गुजरात के महाराजा जयप्रतापसिंह वी. चौहान और महारानी तनवीर चौहान, मप्र के ओरछा के राव राजा विश्वजीत सिंह जू देव और कुंवर पार्थ सिंह जू देव, गुजरात मितली आनंद का शाही परिवार गोहिल बलवीरसिंह, दिलीपसिंह एवं गोहिल कल्पनाबा बलवीरसिंह, कनेटी सानंद, गुजरात के शाही परिवार के जीतेन्द्रसिंह वाघेला और नयनाबा वाघेला, वाधवान के शाही परिवार के कुंवर सुधीर सिंह झाला और कुंवर रानी शक्तिदेवी झाला, गनोद-सौराष्ट्र गुजरात की कुंवर रानी हंसिनीदेवी डी. जाडेजा, जालिम-विलास परिवार जोधपुर की कुंवर रानी मीरा देवी, अभिजीत सिंह राठौड़, दतले पार्वती देवी और दतला वेंकट सत्यनारायण राजू, मोगाल्टुरु के जमींदार मुख्य रूप से मौजूद रहे।

ब्रह्माकुमारीज़ और हमारे राजघराने के बीच पुराना रिश्ता रहा है...

उदयपुर के महाराजा विश्वराज सिंह बहादुर ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ परिवार और हमारे राजघराने का पुराना रिश्ता रहा है। 1937 से शुरू हुआ यह संस्थान आज दुनिया के 140 से ज्यादा देशों में फैला हुआ है। संस्थान का उद्देश्य आध्यात्मिक जागरण और प्रगति है। लोग अध्यात्म से जुड़ें, यही समय की मांग है। कुछ दशकों में देश-दुनिया में तेजी से सामाजिक बदलाव आए हैं। हमने तेजी से पश्चिमी सभ्यता को अपनाया है, यह चिंतन का विषय है। यदि अध्यात्म और वैज्ञानिकता एक हो जाए तो दुनिया को बहुत फायदा होगा। महारानी महिमा कुमारी भी मौजूद रहीं।

ब्रह्माकुमारीज़ से मैं हृदय से जुड़ा हूं

छग सरगुजा-अंबिकापुर के महाराज व छग के पूर्व उपमुख्यमंत्री त्रिभुनानेश्वर शरण सिंह देव ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ परिवार से मैं हृदय से जुड़ा हूं। संस्थान लोगों में नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिकता की शिक्षा देने के लिए सराहनीय कार्य कर रहा है। आज की युवा पीढ़ी को सही मार्गदर्शन की जरूरत है। आज यहां आकर बहुत प्रसन्नता हो रही है। वर्षों से ब्रह्माकुमारी बहनें मेरे पिताजी को हर वर्ष रक्षाबंधन पर राखी बांधने के लिए आती हैं। युवराज आदितेश्वर शरण सिंह देव भी मौजूद रहे।

ब्रह्माकुमारीज़ की सेवा सराहनीय हैं

राजस्थान सिरोही के शाही परिवार के महाराज देवव्रत सिंह बहादुर ने कहा कि महाभारत के इतिहास में वशिष्ठ आश्रम का बड़ा महत्व है। माउंट आबू में स्थित दिलवाड़ा मंदिर पूरे विश्व में अपनी नक्काशी के लिए जाना जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान बहुत ही सराहनीय सेवा कर रहा है। युवराज इंद्रेश्वर सिंह भी मौजूद रहे।

ब्रह्माकुमारीज़ की सेवा सराहनीय हैं

महाराष्ट्र सरकार के कैबिनेट मंत्री व डोंडाइचा के शाही परिवार के जयकुमार रावल ने कहा कि हमारे परिवार ने इतिहास में बलिदान दिया है। हमारा राजपरिवार और ब्रह्माकुमारीज़ समाज कल्याण, मानव कल्याण के कार्य में लगी है।

गुजरात के राजपिपला के युवराज मानवेंद्र सिंह गोहिल ने कहा कि यूएस में ब्रह्माकुमारीज़ का पीस विलेज सेंटर देखा है। वहां अद्भुत शांति की अनुभूति होती है। यहां से विश्व एक परिवार है का संदेश विश्व दिया जा रहा है।

नवा रायपुर में सात साल में बनकर तैयार हुआ महलनुमा विशाल रिट्रीट ट्रेनिंग सेंटर

एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड-शांति शिखर

- 1500 लोगों की क्षमता का एलईडी स्क्रीनयुक्त एसी ऑडिटोरियम।
- **400 लोगों की क्षमता के दो सेमिनार हॉल।**
- 100 लोगों को एक साथ राजयोग ध्यान करने के लिए विशाल मेडिटेशन हॉल
- 100 अतिथियों को ठहरने के लिए सुविधायुक्त कमरे।
- **300 लोगों की क्षमता का डायनिंग हॉल**
- 200 लोगों की क्षमता का वीडियो थिएटर

दो एकड़ में राजस्थानी शैली में बने शांति शिखर का 31 अक्टूबर को प्रधानमंत्री करेंगे लोकार्पण

2018 से 11 हजार सदस्यों ने रोज दिया न्यूनतम एक रुपये

105 फीट ऊंची, 150 फीट चौड़ी और 225 फीट लंबी है इमारत

शिव आमंत्रण, रायपुर, छग। नवा रायपुर के सेक्टर-20 में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का भव्य ट्रेनिंग सेंटर 'एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड-शांति शिखर' बनकर तैयार हो गया है। लगभग दो एकड़ जमीन पर बना भवन देखने में राजस्थानी शैली के महल का अहसास देता है। यह पांच मंजिला भवन हाईटेक सुविधाओं से लैस है। ब्रह्माकुमारीज़ के देश-विदेश में स्थित रिट्रीट सेंटर में यह अपनेआप में सबसे अनोखा और आकर्षक है। 31 अक्टूबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लोकार्पण कर इसे समाज के नाम समर्पित करेंगे। इसके साथ ही यहां सामाजिक कल्याण और आध्यात्मिक उत्थान से जुड़े कार्यक्रम शुरू हो जाएंगे। शांति शिखर में विशेष रूप से समाज के सभी वर्गों को ध्यान में रखते हुए प्रोग्राम चलाए जाएंगे।

रायपुर क्षेत्र में 50 सेवाकेंद्र और 500 उपसेवाकेंद्र संचालित-

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के रायपुर यूनिट के तहत 50 सेवाकेंद्र और 500 उप सेवाकेंद्र संचालित हैं। शांति शिखर के निर्माण के लिए सभी केंद्रों में दान-कोष (भंडारी) लगाई गई थी। इसमें संस्थान से जुड़े सभी सदस्य वर्ष 2018 से हर दिन कम से कम एक रुपया का सहयोग करते रहे हैं। इस भवन के निर्माण में हर एक कार्य को बड़ी ही बारीकी और महीनता के साथ पूरा किया गया है। यहां अंदर प्रवेश करते ही दिव्य एवं शांति की अनुभूति और पवित्रता के प्रकम्पन्नों को साफ महसूस किया जा सकता है। जो इसे अनोखा और यूनिक बनाता है।

जोधपुर से मंगाया गया पिंक स्टोन-

संस्था की तत्कालीन क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी बीके कमला दीदी के मार्गदर्शन में 15 जनवरी 2018 को शांति शिखर की नींव रखी गई थी। वर्ष 2022 में उनके देवलोकगमन से पहले लगभग 80 प्रतिशत काम हो गया था। जमीन ठोस नहीं होने की वजह से काफी गहराई तक मिट्टी निकाल कर स्लैब ढाला गया। इसी पर भवन के सारे कॉलम खड़े किए गए। जोधपुर के कारीगरों ने सात साल में राजस्थानी शैली के इस भवन को तैयार किया है। इसके लिए 150 से अधिक ट्रकों में जोधपुर से पिंक स्टोन मंगाए गए। इंदौर जोन के पूर्व निदेशक राजयोगी ओम प्रकाश भाई का संकल्प था कि रायपुर में ब्रह्माकुमारीज़ का सबसे अनोखा रिट्रीट सेंटर बनाया जाए, जिसे शांति शिखर के रूप में आकार दिया गया है।

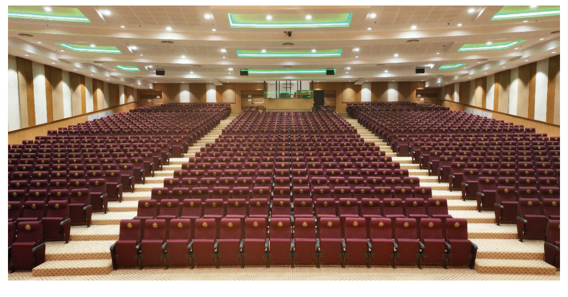

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा गुलाबी पत्थर से बनाई गई यह पहली इमारत

ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा विश्वभर में पिंक स्टोन से बनाई गई यह पहली इमारत है। छत्तीसगढ़ में प्रेस टेंसाइल बीम तकनीक से बनी यह पहली इमारत है। आमतौर पर इस तकनीक से बड़े-बड़े ब्रिज बनाए जाते हैं। 105 फीट ऊंची, 150 फीट चौड़ी और 225 फीट लंबी इस इमारत में अभी दो मंजिले और बनाई जा सकती हैं। पूरी बिल्डिंग को भूकंपरोधी बनाया गया है। आधुनिक रीति से तैयार की गई है।

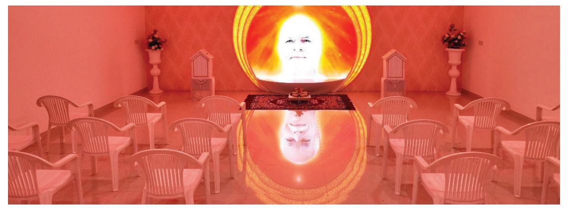

राजयोगी ओम प्रकाश भाईजी और राजयोगिनी कमला दीदी के शुभ संकल्पों से आज शांति शिखर बनकर तैयार है। इसे बनाने में लगभग 11 हजार सदस्यों ने रोजाना कम से कम एक रुपये का दान किया। बड़ी संख्या में लोगों ने भी निर्माण सामग्री दान की। सर्व के सहयोग से आज शांति शिखर बनकर तैयार है। रिट्रीट सेंटर हजारों लोगों के जीवन में शांति का केंद्र बने यही शुभ आश है।
- **बीके हेमलता दीदी, जोनल निदेशिका, इंदौर जोन**

परमात्मा की प्रेरणा, बीके परिवार के शुभ संकल्पों और सहयोग से आज शांति शिखर बनकर तैयार हो गया है। तनाव के दौर से गुजर रहे समाज के लिए यह भवन आशा, विश्वास, दिव्यता और सकारात्मकता ऊर्जा का शांति केंद्र बनेगा।
- **बीके सविता दीदी, निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़ रायपुर क्षेत्र**

ये कार्यक्रम चलाए जाएंगे-

- राजयोग मेडिटेशन और आध्यात्मिक ज्ञान की नि:शुल्क शिक्षा दी जाएगी
- स्ट्रैस मैनेजमेंट के लिए प्रबंधन कौशल शिविर
- बच्चों, युवाओं और महिलाओं के लिए सशक्तिकरण कार्यक्रम
- सभी समाजों और ग्रामीणों के लिए आध्यात्मिक कार्यक्रम
- मूल्यनिष्ठ शिक्षा परियोजना के तहत आवासीय ट्रेनिंग प्रोग्राम
- पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण, मृदा संरक्षण, जल संरक्षण और प्राकृतिक खेती, जैविक-यौगिक खेती को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम
- हृदय रोग, डायबिटीज और नशामुक्ति के लिए जागरुकता कार्यक्रम

ब्रह्माकुमारीज़ नागपुर के विश्व शांति सरोवर का सातवां वर्धापन दिवस मनाया

ब्रह्माकुमारीज़ में भैया-बहनों का रिश्ता है तो सारी समस्याएं यहीं खत्म हो जाती हैं: आरएसएस प्रमुख डॉ. मोहन भागवत

भागवत बोले- मैं ज्ञान देने के लिए नहीं सीखने के भाव से जल्द माउंट आबू आऊंगा

शिव आमंत्रण, नागपुर, महाराष्ट्र। ब्रह्माकुमारीज़ नागपुर के विश्व शांति सरोवर का सातवां वर्धापन दिवस मनाया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ मनुष्य के कल्याण का काम है। पूरे राष्ट्र के हित का काम है और संपूर्ण दुनिया को सुख-शांतियुक्त सुंदर बनाने वाला काम है। यह एक पंथ पर तीन-तीन काज हैं। इस दिशा में हम कामकाज करने में लगे हैं।

उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ शील और चरित्र जगाते हैं और चरित्र जगाने का आधार है- शरीर-मन-बुद्धि के परे जाकर अपने अंतर की यात्रा करना। संघ भी कहता है कि बनना है तो अंदर से बनो। चारित्र के अंदर शील होता है। बाहर का बोलना, चलना, फिरना ठीक करना है तो अंदर की प्रवृत्ति ठीक होना चाहिए। उसके लिए गहराई में अंदर उतरकर वहां से हम सब ठीक करते हैं। सबका तरीका अपना-अपना है लेकिन मूल में एक ही है- अंदर को जगाओ। एक ही उद्देश्य को लेकर परस्पर कार्य करने वालों को परस्पर पूरक होना आवश्यक है। हम आपस में परस्पर सहयोगी होकर चलें, परस्पर बाधक न बनें। आज दुनिया की आवश्यकता है कि भारतवासी फिर से भरपूर होकर दुनिया को सिखाएं। मैं बहुत जल्द माउंट आबू आऊंगा। मैं ज्ञान देने के लिए नहीं सीखने के भाव से माउंट आबू आऊंगा।

ब्रह्माकुमारीज़ विश्व शांति सरोवर के वर्धापन दिवस का संघ प्रमुख डॉ. भागवत ने दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया।

‘मैं‘ से हम में बदल लें, तो सभी समस्याएं हल हो जाएंगी-

डॉ. भागवत ने कहा कि असली सत्य है कि मैं क्या हूं। सभी एक परमात्मा की संतान हैं। सारी सृष्टि उसकी बनाई है। अगर इंसान अपना रवैया ‘मैं‘ से ‘हम‘ में बदल ले, तो सभी समस्याएं हल हो जाएंगी। ‘मैं-मेरा‘ के चक्कर में यह सारी बात हुई। जब आप समझ जाओगे कि मैं-मेरा नहीं हम-हमारा है, तब सारी समस्याएं खत्म हो जाएंगी। विश्व को आज सॉल्यूशन (समाधान) चाहिए। हम लोग भी अंदर के इस अपनापन को जगाने का ही काम कर रहे हैं। रास्ता थोड़ा अलग है, कार्यक्रम अलग हैं, लेकिन उद्देश्य एक ही है। दोनों का कार्य बहुत ज्यादा मिलता है। जैसे ब्रह्माकुमारीज़ सेवाओं के विस्तार के लिए किसी से कोई खर्चा नहीं मांगते हैं, वैसे ही संघ भी कार्य करता है। संघ को सभी मिलकर चलाते हैं।

वर्धापन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

शॉल पहनाकर और स्मृति चिंह देकर किया सम्मान

आरएसएस प्रमुख भागवत का अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ऊषा दीदी और शांतिवन आवास-निवास के प्रभारी बीके देव भाई ने भी स्वागत किया। वहीं भागवत ने नागपुर की संचालिका बीके रजनी दीदी व संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी संतोष दीदी का शॉल पहनाकर स्वागत किया। पीआरओ बीके कोमल ने संस्थान की सेवाओं की वार्षिक सेवा रिपोर्ट सेवांजली भेंट करते हुए सामाजिक सेवाओं के बारे में बताया।

‘मैं‘ से हम में बदल लें, तो सभी समस्याएं हल हो जाएंगी-

डॉ. भागवत ने कहा कि भारत कहता है कि हम एक बड़े देश हैं और हमें बड़ा बनना है, भरपूर बनना है। वह कहता है कि हमको इसलिए बनाया गया है कि समय-समय पर मनुष्य के विचारों में जो जोड़ने वाले तत्व और आत्मा को पहचानने की कमी होती है उसे पूरा करने के लिए हमें एक देश के नाते जीना है, बड़ा बनना है, भरपूर बनना है। जैसे एक साधारण इंसान की बात को कोई तवज्जो नहीं देता है, वैसे ही दुनिया भी जो बड़ा है उसकी बात को मानती है, इसलिए हमें भरपूर बनना है। दुनिया में जो भरपूर हैं वह अपनी शक्ति के बल पर दूसरों को दबाते हैं, आक्रमण करते हैं। भारत ने अपने आप को पहचाना है, भारत कहता है कि हम इसके लिए नहीं हैं।

जैसे गीता के भगवान आए जैसे शिव बाबा आए-

सरसंघचालक डॉ. भागवत ने कहा कि अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥ क्योंकि हमें यह कनेक्शन पता है। यह भाव हमारे अंदर है लेकिन हमारी कृति से भी दिखना चाहिए। भारत पहले से भरपूर है, जरूरत है तो भारतवासियों को भरपूर होने की। इसलिए भारतवासियों को इस तरह का ज्ञान देने वाले समय-समय पर आते हैं। जैसे गीता के भगवान आए, जैसे शिव बाबा आए। कई तरह की कार्यपद्धति को लेकर काम करने वाले प्रवाह आज भारत में विद्यमान हैं। उसमें एक बहुत बड़ा विराट प्रयास ब्रह्माकुमारीज़ का है। ब्रह्माकुमारीज़ में भैया-बहनों का रिश्ता है तो सारी समस्याएं यहीं खत्म हो जाती हैं।

भारत को पूरे विश्व को नई राह दिखानी है-

भागवत ने कहा कि भारत में आज भी अभाव में लोग सुखी रहते हैं। हमारे यहां लोगों को दुख, दर्द, असुविधा के बीच भी संतोष है। भारत में हाथठेला चलाने वाला भी पेड़ की छांव में आराम से सोता है और अन्य देशों में करोड़ों कमाने वाले भी नींद की गोलियां लेकर भी नहीं सो पाते हैं। हमारे पास अपनापन है, इसलिए हमारे पास संतोषधन है।

मुख्यालय आबूरोड से प्रतिनिधिमंडल ने लिया भाग

अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि आज पूरे विश्व को शांति, प्रेम, सद्भावना, एकता की आवश्यकता है। ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय द्वारा भारत सहित पूरे विश्व को आध्यात्मिक ज्ञान दिया जा रहा है। भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए 50 हजार से अधिक ब्रह्माकुमारी बहनें पूरे समर्पण भाव से सेवा में जुटी हैं। महाराष्ट्र वह महान भूमि है जहां देशभर में सबसे अधिक ब्रह्माकुमारी बहनें बनी हैं। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी संतोष दीदी ने कहा कि भारत वह महान भूमि है जिसने दुनिया को जो विचार दिया है वह कोई और नहीं दे सकता है। भारत में ही रामराज्य था और फिर से रामराज्य बनेगा। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके ऊषा दीदी ने कहा कि आज ब्रह्माकुमारीज़ से विश्वभर में दस लाख से अधिक ऐसे भाई-बहनें जुड़े हैं जो घर-गृहस्थ में रहते हुए ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर रहे हैं। एक लाख से अधिक कुमार घर में रहते, जिम्मेदारियों का पालन करते हुए पवित्रता के व्रत को धारण किया है। बीके शारदा दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन से गहन शांति की अनुभूति कराई।

मेडिटेशन, मोटिवेशन के बल से किडनी ट्रांसप्लांट के बाद भी जी रहे नार्मल जिंदगी

मेडिटेशन पॉवर | संकल्प शक्ति का कमाल

शिव आमंत्रण, आबूरोड। मप्र, शिवपुरी जिले के निवासी भानुप्रताप तोमर (36) ने यह साबित कर दिखाया है कि माइंड पावर, मेडिटेशन और मोटिवेशन से हम जीवन की कोई भी जंग जीत सकते हैं। दो साल पहले हुए किडनी ट्रांसप्लांट के दौरान आपकी दृढ़ इच्छा शक्ति की बदौलत जीवन में आई इस गंभीर आपदा में भी निर्भय और निर्भीक रहे। मेडिटेशन से आपको जीवन में नई दिशा मिली और आज आम व्यक्ति की तरह नार्मल जिंदगी जी रहे हैं।

शिव आमंत्रण से बातचीत में तोमर ने बताया कि 2021 में कोरोना महामारी के दौरान सिर में दर्द रहता था। टेबलेट्स तक काम नहीं करती थी। बीपी भी बढ़ा रहता था। दिल्ली के मदनमोहन मालवीय हॉस्पिटल में दिखाया तो जांच में पता चला कि लंबे समय तक बीपी बढ़ा रहने से किडनी सिकुड़ गई है। क्रिएटिन लेवल भी बढ़ा था। वहां आराम नहीं होने पर बाद में सफदरगंज हॉस्पिटल में दिखाया तो डॉक्टर ने बताया कि यह लाइलाज बीमारी है। इसे हम यहीं पर रोक कर रख सकते हैं। इस दौरान मेरा वजन 70 किलो से 55 किलो पर आ गया था।

मप्र शिवपुरी के भानुप्रताप तोमर की संघर्षमय जीवन कहानी

मैंने खुद को कभी मरीज माना ही नहीं: तोमर ने बताया कि कुछ समय आयुर्वेद का भी इलाज कराया लेकिन फायद नहीं हुआ तो फिर दिल्ली में पहली बार डायलिसिस कराया। डायलिसिस के बाद परिवार में सबको पता चला कि किडनी खराब हो गई है। इसके पहले तक मैंने घर में किसी को यह बात नहीं बताई थी। सात माह डायलिसिस चला। डायलिसिस लेने के बाद भी मैं चौथी मंजिल से ग्राउंड फ्लोर तक सीढ़ी से आ जाता था। यह देखकर डॉक्टर की अचंभित रह जाते थे। मैंने कभी खुद को मरीज माना ही नहीं। मैं आम व्यक्ति की तरह फील करता था। डॉक्टर्स ने कहा कि अब किडनी ट्रांसप्लांट करना ही एकमात्र उपाय है।

मां ने दी किडनी तो आज सांसें चल रही हैं: मेरी मां ने मुझे एक जीवन जन्म के समय दिया तो दूसरा जीवन मुझे किडनी देकर दिया। 24 मई 2023 को दिल्ली के राममनोहर लोहिया हॉस्पिटल में किडनी ट्रांसप्लांट की गई। तीन माह बेड रेस्ट के बाद आज नार्मल जिंदगी जी रहा हूं। मेरे जीवन में अचानक आई इस गंभीर परिस्थिति में मैं कभी विचलित नहीं हुआ। न ही कभी खुद को, मन को कमजोर होने दिया। मैंने अंतर्मन से कभी स्वीकार ही नहीं किया कि मैं बीमार हूं। यही कारण रहा कि मैं आज स्वस्थ जिंदगी जी रहा हूं। इन विपरीत दिनों में राजयोग मेडिटेशन से मुझे हर पल मदद, ताकत और आत्मविश्वास मिलता रहा। हम जीवन की किसी भी गंभीर परिस्थिति को माइंड पावर, राजयोग मेडिटेशन और पॉजीटिव मोटिवेशन से जीत सकते हैं। राजयोग का ज्ञान हमें वर्तमान में जीने और चीजों को सकारात्मक रूप से लेने में मदद करता है।

7वीं दादी प्रकाशमणि आबू इंटरनेशनल हाफ मैराथन

सात देशों के 2700 धावकों ने लगाई दौड़, दो हजार फिनिश पाइंट तक पहुंचे

शिव आमंत्रण, आबू रोड/माउंट आबू, राजस्थान।

7वीं दादी प्रकाशमणि आबू इंटरनेशनल हाफ मैराथन में 17 अगस्त को सात देशों के 2700 धावकों ने आबूरोड से माउंट आबू के लिए 21.9 किमी की दौड़ लगाई। मैराथन के नियत समय साढ़े तीन घंटे की अवधि में दो हजार धावक फिनिशिंग पाइंट तक पहुंचे। वहीं 700 धावक आधी दौड़ ही पूरी कर पाए। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि (25 अगस्त) विश्व बंधुत्व दिवस के उपलक्ष्य में इस मैराथन का आयोजन किया गया।

मैराथन को सुबह 6 बजे मनमोहिनीवन परिसर के गेट नंबर दो से जालोर-सिरोही सांसद लुम्बाराम चौधरी, पिंडवाड़ा विधायक समाराम गरासिया, रेवदर विधायक मोतीराम कोली और अतिरिक्त महासचिव बीके करुणा भाई व डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

हर एक किमी में की गई थी रीफ्रेशमेंट की व्यवस्था

मैराथन के समन्वयक बीके सचिन भाई और बीके भानु भाई ने बताया कि धावकों के लिए हर एक किमी में एक रिफ्रेशमेंट पाइंट बनाया गया था, जिसमें नींबू पानी, ग्लूकोज, एनर्जी ड्रिंक आदि की व्यवस्था की गई थी। इन पाइंट पर आबू रोड रोटरी क्लब, माउंट आबू भाजपा मंडल, अर्बुद ब्राह्मण समाज, राजपूत समाज के पदाधिकारियों और सदस्यों ने वालेंटियर के रूप में अपनी सेवाएं दीं। ग्लोबल हॉस्पिटल माउंट आबू और ट्रामा सेंटर आबू रोड के मेडिकल स्टाफ ने भी अपनी सेवाएं दीं। दो एंबुलेंस धावकों के साथ पूरे समय चलती रहीं।

हर 500 मीटर पर तैनात रहे सुरक्षाकर्मी

मैराथन को लेकर आबूरोड और माउंट आबू पुलिसबल ने पूरी मुस्तैदी के साथ सुरक्षा का जिम्मा संभाल रखा था। जिला प्रशासन के अधिकारी भी पूरे समय अलर्ट मोड पर रहे। लगभग हर 500 मीटर पर सुरक्षाकर्मियों की तैनाती की गई थी। साथ ही रीफ्रेशमेंट पाइंट पर भी पुलिसकर्मी मौजूद रहे। छीपाबेरी से सुरक्षा का जिम्मा सीआरपीएफ के जवानों ने संभाल लिया था। यहां से माउंट आबू तक सीआरपीएफ के 28 जवान रनिंग पाइंट तक तैनात रहे।

कई देशों से भाग लेने पहुंचे धावक

सबसे खास बात 18 वर्ष के युवाओं से लेकर 72 वर्ष के बुजुर्गों ने भाग लिया। इसमें भारत के सभी राज्यों सहित खासतौर से साउथ अफ्रीका, ब्रिटेन लंदन, केनिया, दुबई, इथोपिया के रनर्स ने भाग लिया। कुछ धावक प्रोफेशनल्स थे तो कुछ शौकिया तौर पर स्वस्थ रहने के लिए दौड़ते हैं। इसमें युवतियों और महिलाओं ने भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। ओम शांति भवन माउंट आबू में समापन समारोह आयोजित किया गया। जहां विजेताओं को पुरस्कार राशि, मेडल और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

शुभारंभ पर इन्होंने रखे अपने विचार-

- जालोर-सिरोही सांसद लुम्बाराम चौधरी ने कहा कि विश्व बंधुत्व का संदेश लेकर आयोजित की गई यह हाफ मैराथन ब्रह्माकुमारीज़ का सराहनीय कदम है। लोगों में स्वास्थ्य जागरुकता के लिए ऐसे आयोजनों की जरूरत है।
- पिंडवाड़ा विधायक समाराम गरासिया ने कहा कि गर्व की बात है कि हमारे आबू रोड में हर साल होने वाली हाफ मैराथन में देश-विदेश से धावक भाग लेने पहुंचते हैं।
- रेवदर विधायक मोतीराम कोली ने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए योग, प्राणायाम और दौड़ जरूरी है।
- एशियन मैराथन चैंपियन सुनीता गोदेरा ने कहा कि दौड़ के लिए उमंग-उत्साह के साथ जुनून होना जरूरी है। बिना जुनून के दौड़ में जीतना संभव नहीं है। युवा शक्ति जोश-जुनून से लबरेज होती है। इसे ताकत बनाएं। जो लक्ष्य बनाएं उसे पाने के लिए जीजान लगा दें।
- अतिरिक्त महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि आप सभी तन-मन से स्वस्थ रहें यहीं इस दौड़ का उद्देश्य है।
- ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव डॉ. मृत्युंजय भाई ने कहा कि दादी प्रकाशमणि जी का युवाओं से विशेष प्रेम था। वह हमेशा युवाओं में उमंग-उत्साह भरकर आगे बढ़ाती थीं।

ओम शांति भवन माउंट आबू में किया गया पुरस्कार वितरण

विजेताओं को दिए गए पुरस्कार राशि के चेक

को-ऑर्डिनेटर बीके सचिन भाई ने बताया कि मैराथन में प्रथम स्थान पर आने वाले विजेता को पुरस्कार के रूप में 71 हजार रुपये, द्वितीय विजेता को 61 हजार रुपये और तृतीय स्थान पर आने वाले विजेता को 51 हजार रुपये की राशि चेक द्वारा पुरस्कार के रूप में दी गई। इसके अलावा निर्धारित समय में दौड़ पूरी करने वाले और सभी धावकों को मेडल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा।

मैराथन में ये रहे विजेता

पुरुष 18 से 44 वर्ष आयु वर्ग: प्रथम स्थान पर जोधपुर के 24 वर्षीय युवक देवाराम रहे, जिन्होंने 1 घंटा 19 मिनट, 40 सेकंड में दौड़ पूरी की। वहीं द्वितीय स्थान पर गुजरात के अनिल बमबानिया रहे जिन्होंने 1 घंटा 21 मिनट 44 सेकंड में दौड़ पूरी की। तीसरे स्थान पर जैसलमेर के मुकेश कुमार रहे जिन्होंने 1 घंटा 22 मिनट, 17 सेकंड में फिनिशिंग पाइंट पर पहुंचे। चौथे स्थान पर पवन समारिया और पांचवें स्थान पर सुनील कुमार कथेचिया रहे।

पुरुष 45 वर्ष आयु से ऊपर: इस श्रेणी में प्रथम स्थान पर दौसा नांगल के गोरधन मीना रहे जिन्होंने 1 घंटा 37 मिनट, 40 सेकंड में दूरी पूरी की। दूसरे स्थान पर महाराष्ट्र वाशिम के भास्कर काम्बले रहे जो 1 घंटा 38 मिनट 34 सेकंड में फिनिशिंग पाइंट पहुंचे। तीसरे स्थान पर रहे विशाखापटनम के एनएस रामा राजू डाटला ने 1 घंटा 43 मिनट 53 सेकंड में दौड़ पूरी की। चौथे स्थान पर गांधीनगर गुजरात के हरीश चंद्र और पांचवे स्थान पर नई दिल्ली के विजय कुमार रहे।

महिला 18 से 44 वर्ष आयु वर्ग: प्रथम स्थान पर बिहार मुजफ्फरपुर की अर्पिता सैनी रहीं, जो 1 घंटा 38 मिनट 48 सेकंड में पहुंचीं। दूसरे स्थान पर 1 घंटा 39 मिनट 46 सेकंड के साथ नई दिल्ली की रोजी रहीं। वहीं तीसरे स्थान पर रहीं महिमा चौधरी ने 1 घंटा 48 मिनट 33 सेकंड में दौड़ पूरी की। चौथे स्थान पर अहमदाबाद की चौधरी मित्तल शंकरभाई रहीं जिन्होंने 1 घंटा 53 मिनट 37 सेकंड में फिनिशिंग पाइंट पर पहुंचीं। पांचवे स्थान पर पालनपुर की आकृति भरतकुमार जोशी रहीं।

पहले स्थान पर आने वाले जोधपुर के देवाराम ने 1 घंटा 19 मिनट 40 सेकंड में दौड़ पूरी की।

महिला 45 वर्ष आयु से ऊपर: इस श्रेणी में प्रथम स्थान पर सूरत की रत्ना आशीष मेहता रहीं, जिन्होंने 2 घंटा 8 मिनट 35 सेकंड में, दूसरे स्थान पर रहीं जयपुर की गीतू खन्ना ने 2 घंटा 17 मिनट 3 सेकंड में और तृतीय स्थान पर रहीं सूरत की डॉ. किन्नरी निकुंज कोठारी ने 2 घंटा 23 मिनट 58 सेकंड में दौड़ पूरी की। इसके अलावा चौथे स्थान पर दिल्ली की आशा मानरल और पांचवें स्थान पर मुंबई की सारिका जैन रहीं।

संपादकीय

दीपावली पर अपने भीतर भी दिव्यता का दीप प्रज्वलित करें

दीपावली केवल दीपों का त्योहार नहीं, बल्कि आत्मा के उजियारे का संदेश है। सच्चे मायने में दीपावली तब होती है जब हम अपने भीतर की अंधकारमयी शक्तियों—काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को दूर करके आत्मिक ज्योति प्रज्वलित करते हैं। बाहरी दीपक मिट्टी से बने हैं और कुछ समय बाद बुझ जाते हैं, परंतु आत्मा का दीपक यदि परमात्मा के दिव्य ज्ञान से प्रज्वलित हो जाए, तो वह सदा-सर्वदा उजियारा देता रहता है। आज समाज में तनाव, नफरत और असंतोष का अंधकार छाया हुआ है। ऐसे में दीपावली का सच्चा संदेश है अपने भीतर शांति, पवित्रता और प्रेम की रोशनी जगाओ। आत्मा परमपिता परमात्मा की संतान है और उसका स्वभाव ही शांति व आनंद है। जब हम राजयोग साधना द्वारा ईश्वर से योग लगाते हैं, तब भीतर की बुझी ज्योति पुनः प्रखर हो उठती है। यही है असली आत्मिक दीपावली। दीपावली हमें स्मरण कराती है कि जिस प्रकार घर-बाजार की सफाई और सजावट करते हैं, उसी प्रकार मन और हृदय को भी स्वच्छ बनाना आवश्यक है। जब मन की गहराइयों से नकारात्मकता दूर होगी, तभी जीवन में सच्ची समृद्धि और सुख का अनुभव होगा। भौतिक सुख-संपत्ति क्षणभंगुर है, परंतु आध्यात्मिक खजाने चिरस्थायी हैं। अतः इस दीपावली पर केवल दीप जलाने तक ही सीमित न रहें, बल्कि अपने भीतर भी दिव्यता का दीप प्रज्वलित करें। ईश्वर की स्मृति और सद्गुणों का प्रकाश जितना फैलाएँगे, उतना ही संसार सच्चे अर्थों में स्वर्णिम युग की ओर बढ़ेगा। यही ब्रह्माकुमारीज़ का दीपावली का पावन संदेश है।

बोध कथा/जीवन की सीख

समर्पण के साथ करें कर्म

एक गांव नीलू नाम का लड़का रहता था। नीलू गरीब था, लेकिन उसका दिल बड़ा ही उदार था। वह गरीबों की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहता था। एक दिन, नीलू ने अपने गांव के एक साधु को देखा जो गहन तपस्या कर रहे थे। नीलू ने साधु के पास जाकर

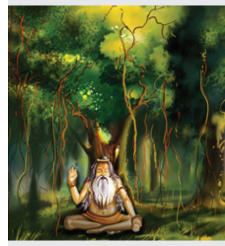

प्रणाम किया और पूछा- बाबा, आप इतनी कठिन तपस्या क्यों कर रहे हैं? साधु ने हंसते हुए कहा - बेटा, मैं इस तपस्या से आत्मा को शुद्ध कर रहा हूं और मुक्ति प्राप्त करने का प्रयास कर रहा हूँ। नीलू ने सोचा- बाबा तो इतनी तपस्या कर रहे हैं, मुझे भी कुछ करना चाहिए। उसने तय किया कि वह भी तपस्या करेगा। नीलू ने अपने गांव के पास एक पुराना वृक्ष देखा, जिस पर कुछ बर्फबारी के कारण पौधे सूख गए थे। उसने वहां जाकर उसे पानी देना शुरू किया। हर दिन, वह उस वृक्ष के पास जाकर पानी देता और उसका ध्यान रखता। कुछ महीनों बाद, वृक्ष में फिर से हरी-भरी पत्तियां उगना शुरू हो गईं। नीलू का दिल खुशी से भर गया।
एक दिन, जब वह साधु के पास गया और उसने अपनी कठिन तपस्या के बारे में बताया तो साधु ने उसके प्रयास को सराहा। उन्होंने नीलू को सिखाया कि हर कार्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और नेकी का फल हमें कभी न कभी जरूर मिलता है। नीलू ने इस अनुभव से सीखा कि कर्म बोध का मतलब है कि हमें अपने कर्मों को ईमानदारी से करना चाहिए, चाहे हमारे पास जितने भी संघर्ष हों। उसने अपने कर्मों में सच्चाई और ईमानदारी लाने का संकल्प लिया और देखा कि नेकी का फल कभी न कभी जरूर मिलता है। इससे हमें सीखने को मिलता है कि अपने कर्मों का दायित्व समझना चाहिए और सही तरीके से करना चाहिए, चाहे हमें उनमें संघर्ष का सामना करना पड़े।

संदेश: कर्म बोध का मतलब है कि हमें अपने कर्मों को समर्पण और समर्थन के साथ करना चाहिए। इससे हमें अंत में सफलता और आनंद मिलता है। यही आनंद जीवन में खुशी प्रदान करता है और दूसरों की दुआओं के पात्र बन जाते हैं। कर्मों में सच्चाई-सफाई हमें ईश्वर के करीब ले जाती है। हम प्रभु के पात्र बन जाते हैं। जीवन आसान हो जाता है।

मेरी कलम से

परसराम वर्मा,
सेवानिवृत्त प्राचार्य, शा. हायर सेकंडरी स्कूल, नेवरा, टिल्डा, रायपुर, छत्तीसगढ़

वास्तव में हम भक्त नहीं बल्कि परमात्मा के बच्चे हैं, उनकी संतान हैं

परमात्मा और हमारे बीच वही रिश्ता है जो पिता-पुत्र का होता है

भगवान के सत्य स्वरूप की तलाश में मैं सभी धर्म, संप्रदायों में गया हूं। सभी जगह से ज्ञान लिया है लेकिन तलाश अधूरी ही रही। लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ में आकर और राजयोग मेडिटेशन सीखकर मेरी तलाश पूरी हो गई। मैं स्वयं को भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे परमात्मा का सत्य ज्ञान मिला। मैं पिछले 12 साल से ब्रह्माकुमारीज़ के नियमित विद्यार्थी के रूप में ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ रहा हूं। जब संस्था से जुड़ा तो सबसे अच्छी बात यह लगी कि यहां की कथनी और करनी एक समान है। मैंने बचपन से रामायण सहित अन्य वेद-शास्त्र, धर्मग्रंथ पढ़े हैं। मेरी रामायण में गहरी आस्था है, आत्मिक स्थिति को ऊंचा बनाने के लिए जो बातें रामायण में बताई गई हैं वहीं बातें यहां बताई जाती हैं।
भक्ति में भक्त और भगवान का रिश्ता बताया गया है, लेकिन यहां के ज्ञान के आधार पर मैंने जाना कि वास्तव में हम भक्त नहीं बल्कि परमपिता परमात्मा के बच्चे हैं, उनकी संतान हैं। वह हमारे पिता हैं। परमपिता और हमारे बीच पिता-पुत्र का रिश्ता है। जो परमपिता के दिव्यगुण और शक्तियां वहीं हमारे दिव्यगुण और शक्तियां हैं। अंतर बस इतना है कि वह शक्तियों के सागर हैं तो हम उसका स्वरूप हैं। सत्य ज्ञान की यह बातें मेरे अंतर्मन को छू गईं। इससे बढ़कर सत्य ज्ञान कोई हो नहीं सकता है। इस धरा पर जल्द ही रामराज्य आएगा। भारत विश्वगुरु बनेगा और एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा होगी।
तुलसीदास जी ने भगवान के बारे में रामायण में लिखा है कि- बिनु पद चलइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ बिधि नाना॥ आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी॥ अर्थात् वह (ब्रह्म) बिना ही पैर के चलता है, बिना ही कान के सुनता है, बिना ही हाथ के नाना प्रकार के काम करता है, बिना मुँह (जिह्वा) के ही सारे (छहों) रसों का आनंद लेता है और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वास्तव में भगवान तो एक परमपिता शिव परमात्मा हैं। बाकी सभी देवी-देवता हैं जो जन्म-मरण के चक्कर में आते हैं। परमात्मा तो अजन्मा, अभोक्ता, अविनाशी, अकर्ता, अगोचर है। शिव बाबा को याद करने से अनेक जन्मों के पाप कट जाते हैं। जन्मोंजन्म का भाग्य बनाने का यह स्वर्णिम मौका है। भगवान हम बच्चों को हाथ फैलाकर बुला रहे हैं। लोगों ने ज्ञान को और भगवान को कठिन बना दिया है, जबकि जितना सरल मां होती है, उससे सरल भगवान होते हैं। परमात्मा हमें इतना प्यार करता है, इतना कोई नहीं कर सकता है। वह तो प्यार का, प्रेम का सागर है।
मेरा अनुभव है कि ब्रह्मचर्य व्रत के पालन से योगबल बढ़ता है। आत्म में शक्ति और ताकत भरती है। अब तो श्वासों, श्वास दिन-रात एक प्रभु पिता की याद में ही मग्न रहता हूं। जीवन में जो श्वासें बची हैं उन्हें शिव बाबा की याद से सफल कर रहा हूं। हर खड़ी को अंतिम खड़ी समझकर तन-मन-धन को सफल कर रहा हूं। परमात्मा को पाने की खुशी में मन सदा खुशियों में झूमता रहता है। पाना था सो पा लिया। मेरा युवाओं से यही आह्वान है कि अपने सत्य स्वरूप को पहचानें, खुद को पहचानें और परमात्मा को पहचानें, अपने जीवन को ऊर्जा को सफल करें। अपने समय को सफल करें।

आत्मगत स्वमान, स्वरूप एवं स्वभाव का व्यावहारिक परिवेश

जीवन का मनोविज्ञान — भाग - 87

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

शिव आमंत्रण, आबूरोड। जीवन की गुणात्मकता के प्रति अंतरात्मा के द्वारा जितने भी सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रयास किए जाते हैं उनमें सात्विक चेतना का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि यह आत्मिक चैतन्यता सदा ही आत्म जगत को आत्मा के स्वमान अर्थात आत्म ज्ञान, आत्म सुख, आत्म शांति, आत्म आनंद, आत्म प्रेम, आत्म पवित्रता एवं आत्मशक्ति की विराटता से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संबद्ध रहती है। आत्मगत स्वरूप का आगमन एवं प्रस्थान अनादि काल से अनवरत रूप में गतिशील है जिसमें आत्मा द्वारा स्वयं के अनादि स्वरूप, आदि स्वरूप, पूज्य स्वरूप, ब्राह्मण स्वरूप और फरिश्ता स्वरूप की स्मृति से जुड़ी स्थिरता और स्थायित्व मानव जाति की समर्पणता तथा संपूर्णता का प्रतीक और प्रतिबिंब है, जिसका साक्षात्कार साधना के पथ पर आत्मगत स्वभाव के रूप में, नियम-संयम, जप-तप, ध्यान-धारणा, स्वाध्याय-सत्य, प्रेम-अहिंसा एवं राजयोग-मौन की निरंतरता से सुनिश्चित हो जाता है।

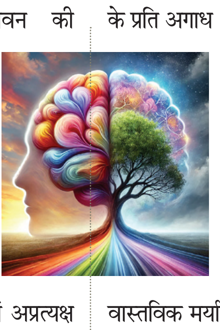

आत्मगत स्वमान का व्यावहारिक परिवेश

जीवन में मूल्यपरक सिद्धान्त को व्यवहार जगत की वास्तविकता के अन्तर्गत स्वीकार करने से ही आत्मा के अस्तित्व गुण की ओर गतिशीलता सुनिश्चित हो पाती है, जिसमें आत्मगत स्वमान का सूक्ष्मस्वरूप जीवात्मा को चैतन्यता के व्यावहारिक परिवेश में स्थायित्व के साथ स्थापित करने में मददगार बन जाता है। आत्मा के गुणों एवं शक्तियों के प्रति अगाध श्रद्धा के सानिध्य में जब नैसर्गिक परिदृश्य की गहन साधना से जप और तप की उपयोगिता सिद्ध हो जाती है, तब आत्मिक परिष्कार से जुड़े हुए महत्वपूर्ण पक्ष आत्मगत स्वमान की व्यावहारिकता द्वारा सहज ही प्रतिपादित हो जाते हैं। चेतना की सम्पूर्णता को अनुभूतिगत स्वरूप में आत्मतत्व, स्वयं की नैसर्गिक उच्चता के द्वारा सदा गतिशील बने रहते हैं, जिसमें आत्मिक स्वमान, स्वरूप एवं स्वभाव की वास्तविक मर्यादा समाविष्ठ होकर अपनी सार्थक भूमिका यथा समय प्राकृतिक रूप से निभाती रहती हैं।

सात्विक चेतना का नैसर्गिक परिदृश्य

आत्मज्ञान के विशुद्ध आचरण को जीवन के विशिष्ट सोपान के रूप में आत्मानुभूति द्वारा सुख-शांति एवं आनंद का अभ्युदय परिलक्षित होने लगता है, जिससे प्रेममयी आत्मिक प्रबोधन को पवित्रतम स्वरूप में आत्मा की शक्तिशाली स्थिति के माध्यम से निरन्तर प्रवाहित स्वरूप में अनुभव किया जा सकता है। सात्विक चेतना के नैसर्गिक परिदृश्य में व्यावहारिक परिवेश की अनुभूतिगत दायित्वबोध से सम्बद्ध उच्चता ही जीवात्मा की चैतन्यता को सम्पूर्ण रूप से मुखरित कर देती है जिसमें आत्मिक स्वमान का वास्तविक स्वरूप आत्मजगत के द्वारा नैसर्गिक रूप से प्रतिबिम्बित होकर सदैव देदीप्यमान होता रहता है।

जीवात्मा स्वरूप में आत्मिक स्वभाव

मानवीय चेतना का चैतन्य स्वरूप आध्यात्मिक जगत से सम्बद्ध अत्यधिक जिज्ञासा से परिपूर्ण आत्मिक स्वभाव है जिसके प्रति संवेदनशील व्यवहार की दिशा में अग्रसर रहकर जीवात्मा सदा से ही स्वयं के अनादि स्वरूप की अनुभूति करने के लिए अंतर्मन से पुरुषार्थ हेतु प्रतिबद्ध रहती है। चेतना के परिष्कृत हो जाने का प्रतिफल स्वयं की पूज्य स्वरूप में स्थापना है जिसकी अनुभूति आत्मिक गुणों एवं शक्तियों के व्यावहारिक प्रयोग के पश्चात् आत्मगत आदर और सम्मान की नैसर्गिकता से युक्त आत्मिक उच्चता का परिणाम है जिसकी परिणिति हेतु जीवन पर्यन्त मानवीय पृष्ठभूमि अध्यात्म तथा पुरुषार्थ के सानिध्य की प्रासंगिकता को बनाये रखती है ताकि चरित्रगत ब्राह्मणत्व की उच्चता को फरिश्ते स्वरूप में रूपांतरित किया जा सके।

आत्मिक शुचिता का व्यावहारिक प्रयोग

सृष्टि में आत्मा के अवतरित, पवित्र स्वरूप के पश्चात सम्पूर्ण जीवन काल में घटित होने वाले मंशा, वाचा एवं कर्मणा के व्यावहारिक पक्ष, अन्तःकरण की पवित्रता को बनाए रखने के संदर्भ एवं प्रसंग में पूर्णतः विश्लेषित होते रहते हैं जो अन्ततः आत्मा की शुचिता पर केन्द्रित होकर प्रायोगिक स्वरूप के क्रियान्वयन में स्वयं को सपर्पित कर देते हैं। जीवात्मा का व्यापक स्वरूप, सम्पूर्ण जगत में नैसर्गिक परिदृश्य की गहन साधना से स्वयं को आत्मगत-स्वमान, स्वरूप एवं स्वभाव की अनुकूलता के आधार से गतिशील बनाये रखता है और स्व कल्याण से सर्व मानव आत्माओं के उत्कर्ष हेतु जीवन पर्यन्त सजगता से पुरुषार्थ में संलग्न रहता है। आत्मगत स्वमान, स्वरूप एवं स्वभाव का व्यावहारिक परिवेश जब अंतर्मुखी स्थितियों से बाह्य जगत की अवस्थाओं में प्रवेश करता है तब आत्मिक गुणों एवं शक्तियों का आभास स्वयं के साथ - साथ, संपर्क और संबंध में आने वाली सर्व मानव आत्माओं के लिए भी अनुकरण एवं अनुसरण का मूलभूत आधार बन जाता है ।

"किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके युवाओं की शक्ति और चरित्र पर निर्भर करती है।"
- बाल गंगाधर तिलक

"विज्ञान और अध्यात्म – दोनों ही जीवन के लिए आवश्यक हैं, एक बिना दूसरे के अधूरा है।"
- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

दादी ने जीवनभर प्रेम, एकता और भाईचारे का संदेश दिया: राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी

विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाई गई दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि

शिव आमंत्रण, आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि देशभर में विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाई गई। मुख्यालय शांतिवन में देशभर से पहुंचे पांच हजार से अधिक लोगों ने दादी को श्रद्धांजली अर्पित कर उनकी शिक्षाओं को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। दादी की स्मृति में बने प्रकाश स्तंभ को विशेष रू सजाया गया था। जहां सुबह 8.15 बजे सबसे पहले मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी, अयोध्या से आए जगतगुरु जियर स्वामी करपात्री महाराज एवं वरिष्ठ पदाधिकारियों ने दादी को श्रद्धांजली अर्पित की। बता दें कि 25 अगस्त 2007 को दादी प्रकाशमणिजी यह नश्वर देह त्याग कर अव्यक्त हो गई थीं। सुबह 10.30 बजे से डायमंड हाल में श्रद्धांजली कार्यक्रम आयोजित किया।
इसमें मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने कहा कि दादी ने सभी के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। उनके हमेशा शब्द होते थे कि मैं तो निमित्त मात्र हूं। शिव बाबा ही यह यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय चला रहे हैं। दादी ने जीवनभर प्रेम, एकता और भाईचारे का संदेश दिया। दादी हमेशा कहती थीं कि प्रेम और एकता में वह शक्ति है जो बड़े से बड़े कार्य आसान हो जाते हैं। उन्होंने प्रेम की शक्ति से सारे विश्व को एक कर दिया था। दादी का प्रेम ही था कि लोग सरहदों की दीवारों को भुलाकर एकता के सूत्र में बंधते गए। आपकी शिक्षाएं, योगी-तपस्वी जीवन, विश्व बंधुत्व की सोच आज भी लाखों लोगों का मार्गदर्शन करती है।
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि दादी का कहना और मेरा करना। मैंने कभी भी दादी को किसी सेवा के लिए न नहीं कहा। दादी की शिक्षाओं के आधार पर ही आज भी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय को संभाल रही हूं। मुझे आज भी पल-पल दादी की सूक्ष्य उपस्थिति महसूस होती है।
हमें एक-एक रुपए को सफल करना है: संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके संतोष दीदी ने कहा कि दादी सदा सेवाएं में दिन-रात व्यस्त रहती थीं और भाई-बहनों को भी व्यस्त रखती थीं। दादी कहती थीं कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आया एक-एक रुपए दान का है। इसलिए हमें एक-एक रुपए को सफल करना है। अतिरिक्त महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि दादी के सान्निध्य में वर्षों तक सेवाएं करने का सौभाग्य मिला। दादी के जीवन से अनेक शिक्षाएं मिलीं। दादी में नम्रता का गुण अद्वितीय था। वह छोटे-बड़े सभी का बहुत ही सम्मान करती थीं। उन्होंने सदा अपने दिव्य कर्मों से आदर्श प्रस्तुत किए।
दादी एक-एक बात को बड़े ही प्यार से सिखाती थीं: अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि दादी के साथ मिलकर अनेक सेवाएं की। दादी एक-एक बात को बड़े ही प्यार से सिखाती थीं। वह यहां आने वाले मेहमानों का बहुत ध्यान रखती थीं। वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक बीके सूरज भाई ने कहा कि दादी की प्यार भरी पालना, अपनापन का कमाल है कि दादी को देखकर हजारों कन्याएं, बेटियां ब्रह्माकुमारी बनती गईं। दादी के जहां-जहां कदम पड़े, वहां सेवाएं तेज गति से बढ़ती गईं। दादी से अपनेपन की फीलिंग आती थी। हर कोई दिल से कहता था मेरी दादी। संचालन प्रयागराज की निदेशिका राजयोगिनी बीके मनोरमा दीदी ने किया। डॉ. बीके दामिनी बहन एवं मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने गीत प्रस्तुत किया।

शांतिवन के तीन हजार श्रमिकों को कराया नशामुक्ति का संकल्प

आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि (25 अगस्त विश्व बंधुत्व दिवस) के उपलक्ष्य में मंगलवार को श्रमिकों का स्नेह मिलन आयोजित किया गया। इस दौरान सभी ने दादी प्रकाशमणि को पुष्पांजली अर्पित की। इसमें तीन हजार श्रमिकों को जीवन में सदा नशे से दूर रहने, नशा नहीं करने और दूसरों को भी नशे से दूरी बनाने के लिए जागरूक करने का संकल्प कराया गया। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि दादी प्रकाशमणि संस्थान में सेवा दे रहे श्रमिकों को अपने परिवार की तरह मानती थीं। वह सभी को अपना सेवा साथी समझती थीं। दादी का हृदय इतना विशाल था कि वह सभी के प्रति सम भाव रखती थीं। दादी की स्मृति में हर वर्ष श्रमिकों के लिए स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। आप सभी भाग्यशाली हैं कि भगवान के घर में सेवा प्रदान करने का सौभाग्य मिला है। खुशी की बात है कि आप सभी यहां पूरे समर्पित भाव से अपनी सेवा करते हैं। इस दौरान सभी श्रमिकों को संस्थान की ओर से ईश्वरीय सौगात प्रदान की गई। मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल भाई ने सभी नशे से दूर रहने का आह्वान किया। सूरत की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके तृप्ति दीदी ने कहा मेडिटेशन जरूर करें।

राजस्थान सरकार के अधिकारियों ने सीखी कचरा प्रबंधन की विधि

आबूरोड। राजस्थान सरकार के जोधपुर संभाग के स्वायत्त विभाग के 65 अधिकारियों का दल ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय में कचरा प्रबंधन के गुर सीखने के लिए पहुंचा। इसे लेकर सोलार थर्मल पावर प्लांट के ठोस अपशिष्ट प्रबंधन संयंत्र में प्रायोगिक तौर पर प्रशिक्षण दिया गया। इस दो दिवसीय आवासीय कार्यशाला में अधिकारियों ने कचरा कलेक्शन से लेकर उसके मैनेजमेंट और गीले कचरे से खाद बनाने की विधि को बारीकी से समझा। बता दें कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सभी परिसरों से निकलने वाले गीले कचरे को रिसाइकिल कर बिजली और जैविक खाद का उत्पादन किया जा रहा है। इससे जहां हर माह छह हजार यूनिट बिजली मिल रही है, वहीं हर माह एक से डेढ़ लाख लीटर जैविक खाद का उत्पादन हो रहा है। इसका उपयोग सब्जी-फसल उत्पादन और बागवानी में किया जाता है।

अपने जीवन में अध्यात्म और योग को शामिल करें: राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी

पत्रकार स्नेह मिलन में सिरोही, जालौर, पाली और अंबाजी से 180 पत्रकारों ने लिया भाग

आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि (25 अगस्त विश्व बंधुत्व दिवस) के उपलक्ष्य में रविवार को पत्रकार स्नेह मिलन समारोह आयोजित किया गया। इसमें सिरोही सहित पाली, जालौर और अंबाजी के 180 पत्रकारों ने भाग लिया। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि दादी प्रकाशमणि जी के जीवन का संदेश था निमित्त भाव, निर्माण भाव और निर्मल वाणी। सारा जीवन उन्होंने इन सिद्धांतों पर चलते हुए गुजारा। मैं 13 वर्ष की आयु से दादीजी के साथ रही। मेरा आप सभी पत्रकार भाइयों से यही आह्वान है कि परमपिता शिव परमात्मा का दिव्य संदेश जन-जन तक पहुंचाएं। अपनी कलम से लोगों को भगवान का संदेश दें। ताकि उन्हें जीवन में सही रास्ता मिल सके। आप सभी भी अपने जीवन में अध्यात्म और योग को शामिल करें।
अतिरिक्त महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि मीडिया समाज का आधार स्तंभ है। आप सभी महान आत्माएं हैं कि आपने इस फील्ड को चुना है। आपके कंधों पर समाज को सही दिशा में ले जाने की महती जिम्मेदारी है। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका व गीता ज्ञान विशेषज्ञ राजयोगिनी बीके ऊषा दीदी ने कहा कि पत्रकार भाई-बहनें जागृति के साथ अपनी कलम के माध्यम से समाज को सकारात्मक दिशा में जागृत करें और सकारात्मकता को बढ़ाने में योगदान दें।

शांतिवन के दादी मीटिंग हाल में आयोजित पत्रकार स्नेह मिलन में संबोधित करते हुए राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी।

जहां भाव होता है, वहां भावना होती है-

आभार व्यक्त करते हुए पीआरओ बीके कोमल भाई ने कहा कि जहां भाव होता है, वहां भावना होती है। यह स्नेह मिलन आप सभी से मिलने का एक जरिया होता है। परमात्मा के घर में आप सभी आए यह परम सौभाग्य की बात है। यह भगवान का घर, आप सभी का घर है। वरिष्ठ पत्रकार बीके पुष्पेंद्र ने कहा कि दादी प्रकाशमणि जी का पत्रकार बंधुओं से विशेष लगाव और प्रेम था। इसी उपलक्ष्य में हर वर्ष स्नेह मिलन आयोजित किया जाता है। आप सभी का ब्रह्माकुमारीज़ परिवार में हृदय की गहराइयों से स्वागत है, अभिनंदन है। मीडिया विंग की मुख्यालय संयोजिका बीके चंदा बहन ने मंच संचालन किया।

समय निकालकर मेडिटेशन जरूर करें

उन्होंने कहा कि भागदौड़ के बीच कुछ समय निकालकर राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करेंगे तो मन को असीम शांति मिलेगी और तनाव से दूर रहेंगे। मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल ने सभी पत्रकारों को मेडिकल विंग द्वारा की जा रही सेवाओं के बारे में बताते हुए जीवन में नशे से दूर रहने का संकल्प कराया।

जयपुर, राज.

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 20 रक्तदान शिविर आयोजित किए गए। इनमें 751 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शुभारंभ पर नगर निगम ग्रेटर की महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने रक्तवीरों को सर्टिफिकेट देकर उत्साह बढ़ाया। जयपुर की सबज़ोन प्रभारी राजयोगिनी सुषमा दीदी, वरिष्ठ पत्रकार राजेश असनानी ने भी संबोधित किया।

जबलपुर, मप्र

कटंगा कॉलोनी शिव उपहार भवन सेवाकेंद्र पर आयोजित रक्तदान शिविर में 110 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। इस मौके पर संचालिका बीके विमला दीदी ने रक्तदान का महत्व बताया। बीके विनीता दीदी ने युवाओं से नियमित रक्तदान का आह्वान किया। विक्टोरिया अस्पताल की डॉ. अमिता जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

रांची, झारखंड

ब्रह्माकुमारीज़ के चौधरी बागान, हरमू रोड सेवाकेंद्र पर आयोजित रक्तदान शिविर का शुभारंभ पुनीत पोद्दार (अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, प्रेमसंस मोटर्स), अभय नंदन अम्बष्ट (संयुक्त सचिव, दिव्यांग आयुक्त), अनुरंजन झा (कार्यपालक दंडाधिकारी), रमेश कुमार श्रीवास्तव (पूर्व निदेशक, रिम्स), बीके निर्मला दीदी ने किया।

वड़ोदरा, गुजरात

ब्रह्माकुमारीज़ के अटलादरा सेवाकेंद्र और उपसेवाकेंद्रों पर आयोजित रक्तदान शिविरों में 350 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। शुभारंभ भाजपा नगराध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश सोनी, कमिश्नर अरुण महेश बाबू, डिप्टी मेयर चिराग भाई बारोट, भाजपा कोषाध्यक्ष गोपालभाई रबारी, संचालिका बीके डॉ. अरुणा बहन ने किया।

अंबाला, पंजाब

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र 16, कंच घर की बीके शिवानी दीदी के मार्गदर्शन में सिटी प्लाज़ा, अंबाला सिटी में आयोजित रक्तदान शिविर में 100 रक्तवीरों ने रक्तदान किया। शुभारंभ डीएसपी विजय जी, सिटी प्लाजा के एमडी अनुज अग्रवाल ने किया। शिविर में पुलिस अधिकारी-जवानों ने भी रक्तदान किया।

बहादुरगढ़, दिल्ली

ब्रह्माकुमारीज़ बहादुरगढ़ द्वारा अग्रसेन धर्मशाला में आयोजित विशाल रक्तदान शिविर में 239 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शुभारंभ नगर परिषद चेयरपर्सन सरोज रमेश राठी, पूर्व विधायक नरेश कौशिक, निवास गुप्ता, दिनेश कौशिक, कर्मवीर राठी, धर्मवीर वर्मा, राजपाल जांगड़ा, बीके अंजली दीदी ने किया।

कोलकाता

कोलकाता म्यूज़ियम में आयोजित रक्तदान शिविर का शुभारंभ नगर निगम के काउंसलर (वार्ड 70) अशिम कुमार बोस और पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं वर्तमान मुख्य सूचना आयुक्त वीरेंद्र भाई ने किया। सेवाकेन्द्र इंचार्ज बीके कानन दीदी ने भी संबोधित किया। ब्रह्माकुमारी बहनों ने भी उत्साह से रक्तदान किया।

कादमा(हरियाणा)

झोझूकलां-कादमा शाखा द्वारा सांगवान अस्पताल में भारतीय सेना के लिए विशाल स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। इसमें दिल्ली कैंट से आर्मी की रक्त वाहिनी टीम द्वारा 232 यूनिट रक्तदान किया गया। डॉ. मेजर योगेंद्र देशवाल, डिप्टी सीएमओ डॉ. आशीष मान, प्रभारी बीके वसुधा बहन मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

बिलासपुर, छग

ब्रह्माकुमारीज़ के स्मृति वन राजकिशोर नगर में आयोजित रक्तदान शिविर में 162 यूनिट रक्तदान हुआ। शिविर का शुभारंभ बेलतरा विधायक सुशांत शुक्ला, महापौर पूजा विधानी, सेवाकेंद्र संचालिका बीके मंजू दीदी, एडिशनल कलेक्टर हर्ष पाठक, एसईसीएल के सीएमडी हरीश दुहन, महेन्द्र जैन ने दीप प्रज्जवलित कर किया।

पानीपत, हरियाणा

पानीपत सर्कल में 11 स्थानों पर रक्तदान शिविर लगाए गए। ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर में रक्तदान शिविर का उद्घाटन इंडियन सिंथेटिक रबर लिमिटेड के सीनियर जनरल मैनेजर मुकेश शर्मा, रक्तदान कैंप की इंचार्ज डॉ. पूजा बहन, ज्ञान मानसरोवर के निदेशक बीके भारत भूषण ने दीप प्रज्वलन कर किया।

रक्तदान में युवाओं से लेकर बुजुर्गों ने दिखाया उत्साह

दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर भारत-नेपाल में चलाया गया रक्तदान महा अभियान

शिव आमंत्रण, आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर समाजसेवा प्रभाग द्वारा देशभर में रक्तदान महाअभियान चलाया गया। इसमें युवाओं से लेकर बुजुर्गों ने बड़े ही उमंग-उत्साह के साथ भाग लिया। देशभर में आयोजित 1500 से अधिक रक्तदान शिविरों में ब्रह्माकुमार भाई-बहनों से लेकर पुलिस, सेना के जवान, एनसीसी, सरकारी अधिकारी, समाजसेवा और आमजन में रक्तदान कर नशामुक्ति का संकल्प किया।

उपमुख्यमंत्री ने किया शुभारंभ जयपुर पीस पैलेस सेवाकेंद्र पर 170 यूनिट रक्त संग्रहित

जयपुर, राजस्थान। श्रीनिवास नगर स्थित ब्रह्माकुमारीज़ पीस पैलेस सेवाकेंद्र पर आयोजित रक्तदान शिविर का शुभारंभ उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने दीप प्रज्वलन कर किया। इसमें 170 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके हेमलता बहन, बीके मीना बहन, बीके कविता बहन, अजमेर संभाग से बीके रूपा बहन, बीके आशा बहन ने उपमुख्यमंत्री का तिलक, माला, दुपट्टा और साफा पहनाकर स्वागत किया। उद्योगपति मदनलाल शर्मा ने ईश्वरीय प्रसाद व स्मृति चिन्ह भेंट किया।

> रक्तदान महादान है। इससे किसी जरूरतमंद को जीवनदान मिल सकता है। यह मानवता की सच्ची सेवा है। ब्रह्माकुमारी संस्था में सिखाया जाने वाला राजयोग मेडिटेशन आज के समय में तनावमुक्त रहने का सहज साधन है। जीवन में अध्यात्म के समावेश से सुख-शांति आती है। संस्थान द्वारा चलाया जा रहा रक्तदान अभियान बहुत ही सराहनीय पहल है।
> **- दीया कुमारी, उपमुख्यमंत्री, राजस्थान**

1098 यूनिट रक्तदान के साथ हिसार ने बनाया रिकार्ड

हिसार (हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के हिसार सहित विभिन्न उपकेंद्रों में बीके अनीता दीदी के मार्गदर्शन में आयोजित रक्तदान शिविरों में कुल 1098 यूनिट रक्तदान किया गया। मुख्य शिविर 22 व 23 अगस्त को हिसार के महाराजा अग्रसेन भवन में हुआ, जिसमें 662 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। पहले दिन कुलपति डॉ. बीआर कंबोज (एचएयू) ने दीप प्रज्ज्वलन कर शुभारंभ किया। वहीं अग्रोहा में 112 यूनिट, सतरौद में 65 यूनिट, बलसमंद में 55 यूनिट, सिसवाल में 70 यूनिट और आदमपुर में 134 यूनिट में रक्त संग्रह हुआ।

छतरपुर में रिकॉर्ड 284 यूनिट रक्तदान

छतरपुर, मप्र। किशोर सागर सेवाकेंद्र पर सेवाकेंद्र प्रभारी एवं समाज सेवा प्रभाग की जोनल कोऑर्डिनेटर शैलजा दीदी के मार्गदर्शन में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें रिकार्ड 284 यूनिट रक्तदान किया गया। इस दौरान सीजेएम स्वाति जैसवाल, जिला पंचायत सीईओ तपस्या सिंह परिहार, सीएमएचओ डॉ. आरपी गुप्ता, जिला अस्पताल ब्लड बैंक प्रभारी डॉक्टर आरती बजाज, नगर पुलिस अधीक्षक अरुण सोनी ने दीप प्रज्वलित कर शिविर का शुभारंभ किया गया।

वाराणसी, सारनाथ

सारनाथ स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में दो दिवसीय रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शुभारंभ प्रदेश के आयुष मंत्र दयाशंकर मिश्र 'दयालु' ने किया। संस्था की क्षेत्रीय निदेशिका बीके सुरेन्द दीदी, प्रबंधक बीके दीपेन्द्र, पूर्व सीएमओ वीवी सिंह, डॉ. केपी जायसवाल, हरहुआ ब्लाक प्रमुख विनोद उपाध्याय, पवन पाण्डेय मौजूद रहे।

मीरजापुर, उप्र।

ब्रह्माकुमारीज के प्रभु उपहार भवन में आयोजित तीन दिनी रक्तदान शिविर में 155 यूनिट रक्तदान किया गया। शिविर का शुभारंभ सेवाकेंद्र प्रभारी बीके बिंदु दीदी, मड़िहान विधायक एवं पूर्व राज्य मंत्री रमाशंकर पटेल, मझवां विधायक सूचीस्मिता मौर्या, नगर विधायक रत्नाकर मिश्रा, डीआईजी विकास कुमार वैद्य ने किया।

बरेली, उप्र

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर आयोजित रक्तदान शिविर में 173 रक्तवीरों ने रक्तदान किया। विधायक कैण्ट संजीव अग्रवाल, डॉ. विमल भारद्वाज, डॉ. पारुल उप्पल, डॉ. अतुल सक्सेना, बीके नीता बहन ने रक्तदाताओं को सम्मानित किया। इसमें आर्मी की 6वीं डिविजन और यूवी एरिया, जाट रिकार्ड के 90 जवानों ने भी रक्तदान किया।

खंडवा, मप्र

ब्रह्माकुमारीज़ के भाग्योदय भवन में आयोजित रक्तदान शिविर में 121 यूनिट रक्तदान किया गया। शुभारंभ महापौर अमृता यादव, जिला पंचायत अध्यक्ष पिंकी वानखेड़े, करणी सेना अध्यक्ष अनुराधा सोलंकी और खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. एनके सेठिया, संचालिका बीके शक्ति दीदी, बीके संतोष दीदी, बीके सुरेखा दीदी ने किया।

रायपुर, छग

ब्रह्माकुमारीज़ के शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर में आयोजित दो दिवसीय रक्तदान शिविर में 180 यूनिट रक्त संग्रह किए किया गया। रेडक्रास सोसायटी के सहयोग से आयोजित इस शिविर बड़ी संख्या में माताओं ने भी रक्तदान किया। संचालिका बीके सविता दीदी ने कहा कि ऐसे आयोजन से बंधुत्व की भावना को बल मिलता है।

बिलासपुर, छग

राजयोग भवन सेवाकेंद्र पर आयोजित विशाल रक्तदान शिविर का शुभारंभ केंद्रीय राज्य आवास एवं शहरी विकास मंत्री तोखन साहू ने किया। इसमें 134 रक्तवीरों ने रक्तदान किया। इस मौके पर सेवाकेन्द्र संचालिका बीके स्वाति दीदी, बीके कमल भाई ने रक्तदाताओं को हेलमेट प्रदान कर सम्मान किया।

मुजफ्फरपुर, बिहार

सेवाकेंद्र पर आयोजित रक्तदान शिविर का शुभारंभ सबजोन निदेशिका राजयोगिनी रानी दीदी, उपमहापौर डॉ. मोनिलिशा, एसकेएमसीएच के चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. संजय कुमार, सहायक सिविल सर्जन डॉ. नवीन कुमार, एमडीडीएम कॉलेज की प्राचार्या डॉ. अलका जायसवाल, उद्योगपति भारत भूषण बंसल, बीके सीता बहन ने किया।

इंदौर, मप्र

शांति शिखर जोनल मुख्यालय में आयोजित रक्तदान शिविर में 200 यूनिट रक्तदान किया गया। शुभारंभ सांसद शंकर लालवानी, क्षेत्रीय निदेशिका बीके हेमलता दीदी, डॉ. साधना सोडाणी, कालानी सेवाकेंद्र की संचालिका बीके जयंती दीदी, एमजीएम मेडिकल कॉलेज के डॉ. नरेंद्र वर्मा ने किया।

कामठी, महाराष्ट्र

ब्रह्माकुमारीज़ के सद्भावना भवन में आयोजित रक्तदान शिविर में 74 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। शुभारंभ सहायक पुलिस निरीक्षक मनीष हिवरकर, वाहतूक प्रभाग निरीक्षक सुनंदाताई देशमुख, उपनिरीक्षक पुलिस प्रमोद ठाकुर, सरपंच रनाला पंकज साबळे, सुदाम राखळे, बीके प्रेमलता दीदी ने किया।

गुरुग्राम, हरियाणा

ब्रह्माकुमारीज़ के गुरुग्राम स्थित सनसिटी सेक्टर 54 सहित सेक्टर 31, सेक्टर 47, सेक्टर 56, सेक्टर 10 A एवं साउथ सिटी-1 में आयोजित रक्तदान शिविर में कुल 300 यूनिट रक्तदान किया गया। शुभारम्भ कुलदीप राणा, अध्यक्ष, एसआरडब्लूए, सोनिया यादव सभासद-वार्ड 21, महेश दायमा पूर्व सभासद ने दीप प्रज्जवलित कर किया।

पंजाब में बाढ़ पीड़ितों के लिए ब्रह्माकुमारीज़ ने बढ़ाए मदद के हाथ

शिव आमंत्रण, जालंधर, पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ पंजाब ज़ोन की इंचार्ज राजयोगिनी प्रेम दीदी व राजयोगिनी उत्तरा दीदी के मार्गदर्शन में राजयोगा भवन, जालंधर सेवाकेंद्र की ओर से शाहकोट में सतलुज नदी के किनारे शिविरों में ठहरे बाढ़ प्रभावित परिवारों को राशन सामग्री वितरित की गई। सेवाकेंद्र संचालिका बीके संधीरा बहन एवं बीके विजय बहन ने कहा कि विपरीत परिस्थिति में किसी का सहयोग करना, उनके लिए आशा और उम्मीद की किरण बनना ही मानवता की सच्ची सेवा है। मुश्किल समय में किसी का साथ देना न केवल उनके दर्द को हल्का करता है, बल्कि उन्हें आगे बढ़ने की ताकत भी देता है। यही करुणा और संवेदनशीलता मानवता की असली पहचान और श्रेष्ठ सेवा है।

राशन सामग्री वितरण अभियान की शुरुआत रेडक्रॉस भवन से हुई। यहाँ एडीसी अमनिंदर कौर बराड़ ने ब्रह्माकुमारीज़ की राशन गाड़ी को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर डिस्ट्रिक्ट रेवेन्यू ऑफिसर नवदीप सिंह भोगल, असिस्टेंट कमिश्नर मुकलिन आर. एवं ज़िला रेडक्रॉस सोसाइटी सचिव सुरजीत लाल उपस्थित रहे।

गट्टा मंडी कासु शिविर स्थल पर राशन वितरण के समय एसडीएम शाहकोट शुभि आंगरा, सरपंच जरनैल सिंह एवं राजयोगा भवन जालंधर के सभी भाई-बहनें सहयोग के लिए उपस्थित रहे। बीके संधीरा बहन ने कहा कि ब्रह्माकुमारी परिवार का यह प्रयास केवल शाहकोट तक ही सीमित नहीं है, बल्कि पंजाब के अन्य बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में भी लोगों की मदद करने हेतु यथाशक्ति प्रयास चल रहा है।

शिव आमंत्रण, बिजावर/छतरपुर (मप्र)। सटई नगर में शिक्षक दिवस पर जगदीश काली फार्म हाउस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विषय था 'बुराइयों से मुक्त समाज के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका। इसमें हाई सेकेंडरी स्कूल के प्राचार्य सुशील वर्मा, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष बाला प्रसाद पटेल, रिटायर्ड शिक्षक प्रेम बहादुर सिंह, विधायक प्रतिनिधि निरंकार पाठक, स्व. जगदीश प्रसाद प्रचार-प्रसार समिति के सचिन दीप्ति पाठक, सोनी समाज के अध्यक्ष अरुण सोनी, पंडित राजकुमार अवस्थी, भाजपा नेता पवन सोनी मुख्य रूप से मौजूद रहे। सेवाकेंद्र संचालिका बीके प्रीति दीदी ने उपरोक्त विषय पर संबोधित करते हुए सभी शिक्षकों का सम्मान किया।

आरटीसी की महिला प्रशिक्षुओं के लिए तनावमुक्ति कार्यशाला आयोजित

शिव आमंत्रण, नीमच (मप्र)। सुरक्षा बल में रहते हुए चाहे पारिवारिक हो, चाहे सामाजिक हो, चाहे व्यक्तिगत हो, जीवन में तनाव वाली परिस्थितियां तो आती ही हैं लेकिन आध्यात्मिक शक्ति व मेडिटेशन से सभी परिस्थितियों का सामना कर उनपर जीत प्राप्त करने की शक्ति बढ़ती है। उपरोक्त विचार वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके श्रुति दीदी ने सीआरपीएफ की आरटीसी शाखा में महिला प्रशिक्षुओं के सम्मुख तनाव मुक्ति प्रशिक्षण के दौरान व्यक्त किये। आपने बताया कि डर को समाप्त करने के तीन मंत्र हैं - फेस इट, फाईट इट एण्ड फिनिश इट, साथ ही तनाव मुक्ति के लिए कभी किसी से कम्पेरिजन न करें, कम्पलेन न करें और कॉम्पिटिशन करते हुए भी किसी के प्रति द्वेष भाव न रखें। सबजोन संचालिका बीके सविता दीदी ने मन की शांति के लिए आंतरिक साधना की आवश्यकता पर जोर दिया।

अंबाला में विराट संत सम्मान सम्मेलन आयोजित, सनातन संस्कृति पुनर्स्थापना पर मंथन

राजयोग का अभ्यास चमत्कार नहीं बल्कि वैज्ञानिक विधि है

शिव आमंत्रण, अंबाला, पंजाब। जग्गी कॉलोनी स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सुप्रीम लाइट हाउस में राजयोगिनी बीके दिव्या दीदी और राजयोगिनी बीके मीरा दीदी के नेतृत्व में विराट संत सम्मान सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का विषय रहा "अध्यात्म द्वारा सनातन संस्कृति की स्थापना"। कार्यक्रम का शुभारंभ संत-महात्माओं एवं विचारकों द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। मंच पर पहुंचे सभी संतों और अतिथियों का स्वागत फूलमालाओं, पट्टकों और बैज पहनाकर किया गया। लगभग 400 से अधिक भाई-बहनों ने इस सम्मेलन में भाग लिया, जिनमें पानीपत जिले के विभिन्न मंदिरों के पुजारी भी सम्मिलित हुए।

बीके रामनाथ भाई (अंतर्राष्ट्रीय संयोजक, माउंट आबू) ने कहा कि भारत आज विश्वगुरु बन रहा है। राजयोग साधना से भटकी हुई बुद्धि स्थिर होती है। यदि जीवन में उन्नति चाहते हों तो पांच सेकंड राजयोग का अभ्यास करें, यह कोई चमत्कार नहीं बल्कि वैज्ञानिक विधि है। बीके लक्ष्मी दीदी ने कहा कि भारत ने हमेशा दुनिया को सहारा दिया है। कोरोना काल में वैक्सीन का वितरण इसका प्रमाण है। संत समाज ही समाज को ऊपर उठाने की शक्ति रखता है।

आचार्य महामंडलेश्वर कमल किशोर महाराज ने कहा कि "ब्रह्माकुमारीज में आत्मा के गुणों और परमात्मा से उसके संबंध का ज्ञान मिलता है। ओम शांति महामंत्र है।" स्वामी राजेश्वरानंद महाराज ने कहा कि जीवन का सार आत्मज्ञान है। "यदि मनुष्य अपने सतगुणों को धारण कर ले तो दुखों से मुक्ति पा सकता है। सरदार ज्ञानी शेर सिंह ने कहा कि जिसके पास ब्रह्मदृष्टि होती है, उसे किसी में कोई त्रुटि नजर नहीं आती है। आचार्य स्वामी कैलाश स्वरूपानन्द महाराज, देवज्ञ महर्षि आचार्य निशांत जी, आचार्य श्री सनातन पंत्री चैतन्य जी, स्वामी अनुभवानन्द गिरि महाराज, बाबा ठाकुरदास जी महाराज, महन्त भीमपुरी जी महाराज सहित अनेक संत-महात्माओं की गरिमामयी उपस्थिति रही। संचालन बीके शैली दीदी और अरविंद भाई ने किया।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, बेतिया, बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में 131 लोगों ने रक्तदान किया। उद्घाटन डीआईजी हर किशोर राय, एसएसबी कैंप असिस्टेंट कमांडेंट आशीष जे. कृष्णा, डॉ. सुधा भारती, डॉ. राजेश, डॉ. डीके मिश्रा, बीके अंजना दीदी, अजय कुमार केशान ने दीप प्रज्वलित कर किया।

शिव आमंत्रण, बीकानेर, राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज़ के संभागीय केन्द्र, सार्दुल गंज में आयोजित रक्तदान शिविर में 105 यूनिट रक्तदान किया गया। शुभारंभ सीएमएचओ डॉ.पुखराज साध, संभाग संचालिका बीके कमल बहन, उद्योगपति सुभाष मितल, डॉ.आरके काजला, प्रो. डॉ. अरुण भारती, डॉ. एलकेकपिल, डॉ. पारुल प्रकाश, डॉ. प्रमिला खत्री, डॉ. शंकर लाल जाखड़ ने किया।

शिव आमंत्रण, दुर्ग (छत्तीसगढ़)। जिला अस्पताल के ब्लड सेंटर में ब्रह्माकुमारी द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में एक दिन में रिकार्ड 401 यूनिट रक्तदान किया गया। जिले के इतिहास में एक ही दिन में इतनी बड़ी संख्या में रक्तदान का रिकार्ड बन गया। इस दौरान कलेक्टर अभिजीत सिंह, हेमचंद यूनिवर्सिटी के कुलपति संजय तिवारी, संचालिका रीटा दीदी सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, मेहसाणा, गुजरात। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित महारक्तदान अभियान के तहत 111 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। इस दौरान विधायक मुकेश भाई पटेल, भाजपा जिला अध्यक्ष गिरीश भाई राजगौर, 188 बार रक्तदान कर चुके दीपक भाई पटेल, जेसीस के प्रमुख चंद्रकांत भाई पटेल, बीके सरला दीदी, बीके कुसुम बहन ने अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, बीना, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के बीना सेवाकेंद्र पर रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इसमें विधायक डॉ. निर्मला सप्रे ने परिवार सहित रक्तदान किया। शिविर में 78 यूनिट रक्तदान किया गया। बीके सरोज दीदी, बीके जानकी दीदी, बीके सरस्वती दीदी ने दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया।

नई शिक्षा पर शिक्षकों का राष्ट्रीय सम्मेलन

आध्यात्मिक शिक्षा श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण करती है

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के शिक्षा प्रभाग द्वारा विश्व एकता और विश्वास हेतु नई शिक्षा विषय पर डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में शिक्षकों का राष्ट्रीय महासम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें दिल्ली, एनसीआर और देश के विभिन्न प्रांतों से पधारे लगभग 500 शिक्षाविदों ने भाग लिया।

दो सत्रों में आयोजित कॉन्फ्रेंस में शिक्षाविद, नीति-निर्माता, स्वास्थ विशेषज्ञ एवं आध्यात्मिक नेताओं ने संबोधित किया।

मुख्य अतिथि, दिल्ली सरकार के उद्योग मंत्री व भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ विश्व की सबसे बड़ी संस्था है जो नारी शक्ति का परिचायक है। यहां की आध्यात्मिक शिक्षा श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण करती है।

प्रेरक वक्ता ब्रह्माकुमारी शिवानी दीदी ने कहा कि सृष्टि का आरंभ संकल्पों से होता है और मानव संसार उसके संस्कारों से निर्मित होता है। बाहरी संसाधनों के उपयोग से पहले, व्यक्ति के आंतरिक सशक्तिकरण आवश्यक है। आध्यात्मिक ज्ञान एवं सहज राजयोग ध्यान के माध्यम से हम अपने जीवन में सुखद, सफल व सकारात्मक बदलाव और पूर्णता को प्राप्त कर सकते हैं तथा प्रकृति के दोहन को भी रोक सकते हैं।

इस दौरान संस्थान के अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके शुक्ला दीदी, बीके चंद्रिका दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

मऊ, उप्र। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पुलिस लाईन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राजयोग द्वारा सम्बंधों में मधुरता विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सेवाकेंद्र संचालिका बीके विमला दीदी ने राजयोग की भूमिका और योगदान पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में 500 से अधिक पुलिस कर्मियों को नशा मुक्ति का संकल्प भी कराया। ब्र.कु. आरती बहन, ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. एकता बहन ने भी पुलिस कर्मियों को शुभ-कामनाएं देते हुए नशे से होने वाली हानि और राजयोग से लाभ के बारे में अपने विचार रखें।

शिव आमंत्रण, चुनार, मीरजापुर (उप्र)। चुनार सेवाकेंद्र द्वारा मेरा भारत, नशा मुक्त भारत अभियान के तहत शिक्षक दिवस पर शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय लखनऊ के पूर्व कुलपति कृपाशंकर सिंह, विंध्यवासिनी राज्य विश्वविद्यालय की अंतरिम कुलपति शोभा गौड़, वैज्ञानिक डॉ. कृष्णाकान्त शुक्ला, माध्यमिक शिक्षा परिषद् के उप सचिव सत्येन्द्र नाथ तिवारी, , आनंद त्रिपाठी, प्रभारी बीके बिंदू दीदी, सारनाथ के बीके विपिन ने संबोधित किया।

शिव आमंत्रण, पानीपत, हरियाणा। राष्ट्रीय शिक्षक दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर में शिक्षाविद सम्मेलन हुआ, जिसमें 1100 से अधिक शिक्षक शामिल हुए। कार्यक्रम का उद्घाटन हरियाणा के मंत्री रणबीर सिंह गंगवा, डीईओ राकेश बुरा, बीके सुमन दीदी, राजयोगिनी सरला दीदी और बीके भारत भूषण ने किया। वक्ताओं ने शिक्षा को केवल जानकारी नहीं बल्कि चरित्र निर्माण और मूल्य आधारित जीवन का माध्यम बताया। समापन पर 100 से अधिक विशिष्ट शिक्षकों को सम्मानित किया गया।

नौसैनिकों के लिए तीन दिवसीय आध्यात्मिक सशक्तिकरण सम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम। भोरा कलां स्थित ओम ओम शांति रिट्रीट सेंटर में भारतीय नौसेना रक्षा नागरिकों के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण विषय पर तीन दिवसीय सेमिनार सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित किया गया।

भारतीय नौसेना के सेवानिवृत्त एडमिरल आदित्य हारा ने कहा कि किसी भी कार्य में उत्कृष्टता के लिए आध्यात्मिकता जरूरी है। भारत विभिन्न संस्कृतियों का देश होते हुए भी आध्यात्मिक रूप से एक है। आध्यात्मिकता केवल व्यक्तिगत जीवन में ही नहीं बल्कि देश की सुख-समृद्धि के लिए भी जरूरी है। ब्रह्माकुमारीज़ आध्यात्मिक मूल्यों के आधार से विश्व में शांति एवं प्रेम का संचार कर रहा है। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने कहा कि जीवन में असली खेल हमारे विचारों का है। शारीरिक स्वास्थ्य से भी जरूरी मानसिक स्वास्थ्य है। क्योंकि तन पर सबसे अधिक प्रभाव मन का ही पड़ता है। हमारा व्यक्तिगत जीवन जितना अच्छा होगा, उतने ही अच्छे ढंग से हम देश व समाज की सेवा कर सकते हैं। बाहरी परिस्थितियों का सामना करने के लिए आंतरिक शक्ति जरूरी है। सुरक्षा सेवा प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी बीके शुक्ला दीदी, नौसेना के कैप्टन शिव कुमार ने प्रभाग की सेवाओं की जानकारी दी। संचालन सेवानिवृत्त कर्नल बीसी सती ने किया। कार्यक्रम में 120 से भी अधिक नौसेना रक्षा नागरिकों ने शिरकत की।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, मुंबई। महाराष्ट्र के राज्यपाल रहे सीपी राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति के लिए नामांकित होने पर राजभवन में ब्रह्माकुमारीज़ के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा अभिनंदन किया गया। इस दौरान संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके संतोष दीदी, बीके रुक्मिणी व अन्य मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के प्रतिनिधिमंडल ने भारत के नवनिर्वाचित उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन से भेंट कर शुभकामनाएं दी। गुरुग्राम स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी, मैसूर जोन की निदेशिका राजयोगिनी लक्ष्मी दीदी सहित अनेक सदस्यों ने मुलाकात की। साथ ही उपराष्ट्रपति को माउंट आबू आने का निमंत्रण भी दिया।

मऊगंज, रीवा (मप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन सिंह यादव के जिला मऊगंज पधारने पर रीवा सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके निर्मला दीदी एवं बीके लता बहन ने मुख्यमंत्री को परमात्मा शिव बाबा का स्मृति चिंह भेंटकर सम्मान किया। साथ ही मुख्यालय माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया। इस मौके पर स्थानीय जनप्रतिनिधि सहित जिला प्रशासन के अधिकारी मौजूद रहे।

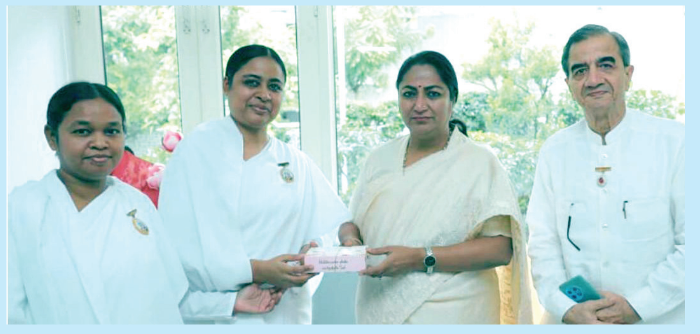

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारी बहनों ने दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से उनके सिविल लाइन्स स्थित निवास पर भेंट की। साथ ही उन्हें एजुकेशन विंग कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया।

शिव आमंत्रण, लखनऊ। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय के 23वें दीक्षांत समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के प्रतिनिधि के रूप में बीके सुमन दीदी, बीके सोनी दीदी ने भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मान किया। बता दें कि ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला अंतरिक्ष मिशन गगनयान से जुड़े हैं।

रियल लाइफ

जब मातेश्वरी ने कानपुर में ज्ञानामृत की वर्षा की

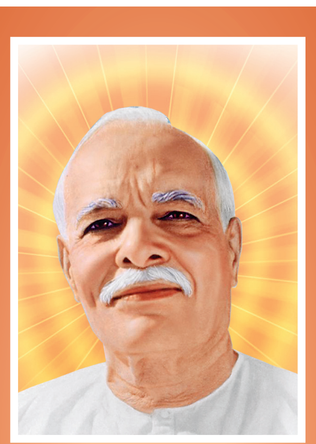

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

वत्सो; क्या अभी भी संसार के विषय-विकारों से मन ऊबा नहीं ? जिस प्रभु को पुकारते थे, क्या उसके यहां पधारने पर उससे आत्मिक मिलन मनाने के लिये अभी भी पवित्र बनने का चाव आप में नहीं? जीवन के ये थोड़े से दिन गुजरते पता भी नहीं चलता...

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

कानपुर में मातेश्वरी जी की मधुर ज्ञान-वीणा की मधुर स्वर लहरी.... ब्रह्माकुमारी आत्मइन्द्रा जी ने लिखा है- 'इस अवसर पर कानपुर में एक विशाल सभा का भी आयोजन किया गया था। वह दृश्य भी देखने जैसा था। बहुत ही शान्त वातावरण था। मंच भी बड़े ही अच्छे ढंग से सजा हुआ काफी ऊँचा बना हुआ था। नगर के बुद्धिजीवी लोग काफी संख्या में पधारे हुए थे। सभी मातेश्वरी जी की प्रतीक्षा में बैठे थे और उनके नेत्र उस प्रवेश द्वार की ओर लगे हुए थे जिस द्वार से मातेश्वरी जी ने सभा में पधारना था। आखिर में सभी की प्यारी माँ आती दिखाई दीं। उनकी चाल में एक निरालापन था। मुख कमल तो सदा खिला रहता ही था। व्यक्तिगत रूप उनका भव्य था ही। उनका आध्यात्मिक प्रभाव भी कुछ ऐसा निराला था कि मन को शीतलता एवं हर्ष प्रदान करता था तथा पवित्रता एवं प्रभु-प्रेम के लिये प्रेरित करता था।

माँ को देखते ही सभी लोग अपने-अपने स्थान पर उठ खड़े हुए और वातावरण में एक कोतुहल था कि देखें माँ क्या कहती हैं। माँ ने श्वेत आसन धारण किया और उनके विराजमान होने पर सभी लोग पूरे ध्यान से उनकी मधुर वाणी को सुनने के लिये उत्सुक हो उठे। मंच-मंत्री भी पहले तो अवाक से बैठे रहे, शायद वे इसी सोच में थे कि सरस्वती मां का परिचय उनके सामने किन शब्दों में दें। परन्तु सरस्वती मां के उपस्थित होने से उनकी भी वाणी का प्रवाह अभूतपूर्व रूप से चला। घोषणा होने के बाद मां पहले तो मौन रहीं। सरस्वती भी मौन हो जाए तो इसका भी कुछ तो रहस्य रहा होगा। ज्ञान एवं योग से प्राप्त होने वाला आनन्द है ही निराला कि उसका वर्णन कैसे किया जाए? अतः मां तो प्रभु-प्यार से भरे नेत्रों द्वारा मानो इशारे ही इशारे में समस्त जनता को कह रहीं थीं 'वत्सो; क्या अभी भी संसार के विषय-विकारों से मन ऊबा नहीं ? जिस प्रभु को पुकारते थे, क्या उसके यहां ओसमझते हैं? मुख की बजाय नैन बोलते रहे। नयन अधिक निकट हैं भृकुटि में स्थित आत्मा के। अतः मां का आत्मन् नैनों से सभी वत्सों को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा में कह रहा था- बस बहुत हो गई! अब तो चलने की तैयारी करो उस प्रभु की प्रकाश नगरी के पावन वातावरण में।'

फिर जो लोग इस मौन भाषा को नहीं समझते थे, उनके लिये माँ के होंठ वीणा के तारों की तरह ज्ञान-गीत गाने लगे। अद्भुत स्वर लहरी थी जिससे आत्मन् आनन्द-विभोर हो उठा। ईश्वरीय तान छेड़ दी थी माँ ने। आत्मिक सुख अनुभव करने लगे सभी वत्स ऐसा कि जैसे मरुस्थल में, गीष्म ऋतु में प्यासे पथिक को कोई शीतल जल का प्याला पिलाकर उसके प्राणों की रक्षा करे। अलौकिक माँ से मधुर ज्ञान-लोरी पाकर आत्माओं को 5000 वर्ष के बाद सच्चे स्नेह का अनुभव हुआ।

इस प्रकार माँ ने प्रथम बार यज्ञ से बाहर जाकर मधुर ज्ञान वीणा से जन-मन को प्रभु-सन्देश दिया। अब तो अनेकानेक सेवाकेन्द्रों से माँ को निमन्त्रण आने लगे कि वे उनके नगर में भी आकर आत्माओं को ज्ञान की मधुर लोरी देकर जगाएँ। अतः इस लोक कल्याण के लिए सेवार्थ माँ को दिल्ली में आना पड़ा।

ब्रह्माकुमारी रुक्मिणी जी ने लिखा है- देहली में नित्य प्रति ज्ञान लाभार्थ आने वाले बहन-भाई तो बहुत समय से इस बात के लिए अनुरोध कर ही रहे थे कि मातेश्वरी जी तथा पिताश्री जी देहली में पधारें। वे बहुत बार मीठा उलहना देते हुए कहते थे कि 'आपने तो उनसे कई वर्ष तक ज्ञान लाभ लिया है, डायरेक्ट उनसे योग भी सीखा है। क्या जगत के अलौकिक माता-पिता से हमें यह सौभाग्य प्राप्त नहीं होगा? हैं तो सभी ईश्वर की गोद के बच्चे, तब क्या हमें उस परमपिता से इन साकार माध्यमों के द्वारा आत्मिक स्नेह, दिव्य सम्पदा, पवित्रता की अपार राशि तथा हर्ष का अविनाशी खज़ाना लूटने का भी अवसर नहीं मिलेगा? इस प्रकार, उन सभी ने भाव-विभोर होकर, अति-स्नेह-युक्त एक सामूहिक पत्र 'मधुबन' में लिख भेजा। **क्रमशः**

प्रेरणापुंज

हर बात से अपने मन को खाली करके, बाबा को दिल में बिठाना

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

हमारे ईश्वरीय स्नेह की शक्ति उसको बल दे, उसके निर्बलता का असर ग्लानि के रूप में हमारे अन्दर न आए। किसी का प्रभाव हमारे ऊपर न पड़े, बाबा की महिमा को सदा याद रखें। देवताओं से भी ज्यादा महिमा ऊंच ते ऊंच भगवान की है जिसने उन्हें ऐसा बनाया। अगर कोई-बाबा का अच्छा बच्चा है तो उसको अच्छा बनाने वाला कौन? हमारा बाबा। हर बात से अपने मन को खाली करके, बाबा को दिल में बिठाना, औरों को दिल से बाबा की याद दिलाना। जो हमारे दिल में बात होगी वहीं सेवा में आएगी। वहीं संग-सम्पर्क में आएगी। दिल और मन का आपस में गहरा कनेक्शन है, जो कर्म में जरूर आता है। कोई कहे मेरे दिल में कुछ नहीं था, पता नहीं क्यों हुआ! इम्पासिबुल है। दिल की अच्छी भावना है तो अच्छा होगा जरूर, उसमें शक की बात है ही नहीं। हमारी भावना अच्छी हो, उसमें शक लाना यह भी भूल है। भावना अच्छी है तो होगा जरूर।

राजयोगिनी दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

अपने आपको बहुत समझ से चलाना है। अपने आपको नहीं ठगना है। ठगी करने का संस्कार भी बहुत पक्का हो गया है। चोरी का पता पड़ जाता है लेकिन ठगी का पता नहीं पड़ता है। अपने आपको दिखाते हैं कि मैं कोई ठगी नहीं करता लेकिन वह बड़े होशियार होते हैं। कई बातों को मिक्स कर देंगे। ठगी करने वाला यह नहीं समझता कि मैं अपने आपको ठगता हूं। भगवान से ठगी करते, बाहर से अच्छा दिखाना, अन्दर से दूसरा रहना यह भी ठगी है। अन्दर बाहर साफ रहना, यह बाबा को बहुत पसन्द आता है।

> बाबा को प्रत्यक्ष करना बड़ा सहज है, जितनी हमारी अंदर बाहर सफाई-सच्चाई है। मिक्स नहीं है तो बाबा को प्रत्यक्ष कर सकते हैं।

दुनिया वाले भी, भगवान को न मानने जानने वाले भी समझें यह अन्दर बाहर साफ हैं। इतनी हर इंसान को समझ है। जान जाते हैं यह अन्दर बाहर साफ है या नहीं है, यह फीलिंग आती है। जब संकल्प आता है बाबा को प्रत्यक्ष करें। बाबा को प्रत्यक्ष करना बड़ा सहज है, जितनी हमारी अन्दर बाहर सफाई-सच्चाई है।, कर्म में, संकल्प में, वचन में जरा भी ठगी नहीं है, मिक्स नहीं है तो बाबा को प्रत्यक्ष कर सकते हैं।

अपने आपको अच्छी तरह से पहचानूं तो कहेंगे मैं योगी हूं। देवता धर्म वाली आत्मा हूं। घर जाने की तैयारी में लगी हूं। कोई भी बात में जरा भी आकर्षण नहीं होगी, संसार समाचार सुनने का भी ख्याल नहीं आएगा। यह समाचार सुनूं कैसा है, क्या है? उससे भी ऊपर में सतयुग में कोई दैवीगुण आपे ही नहीं आ जाएंगे, यहां धारण करने पड़ेगे। दैवीगुण सतयुग में नेचरल होंगे, लेकिन धारणा यहां की होगी। कोई सांसारिक सुखों की आकर्षण न हो। यहां जो दुःख-सुख, हार-जीत होती है उसमें भी समान रहूं। सहनशीलता हो, सन्तुष्ट रहूं। अन्दर ही अन्दर अपने श्रेष्ठ संकल्प कर्म से अपना अच्छा भाग्य बनाने की धुन में रहूं और किसी को देखूं तो अच्छी मीठी रूहानी दृष्टि से देखूं। **क्रमशः**

अव्यक्त इशारे

बाबा ने कहा - चाहना और करना एक करो, एवररेडी बनो

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

कई कहते हैं दो हजार तक तो चलेगा, अरे दो हजार तक वर्ल्ड का विनाश हो लेकिन तुम्हारा विनाश कब होगा वह डेट है? बाबा तो कहता है मैं डेड कॉन्सेस बनाऊंगा ही नहीं। इतना भी बाबा ने कहा- अगर किसको पूछना है तो भले मेरे ज्योतिषी बच्चों से पूछो। उन्हों का काम वह करेंगे। मैं भी वहीं काम करूं जो ज्योतिषियों का है। मैं यह करने वाला हूं ही नहीं, सीधा जबाव बाबा ने दिया। मुझे डेड कॉन्सेस बनाना नहीं है। मैं सोल कॉन्सेस बनाने आया हूं, इसलिए एवररेडी रहो। एवररेडी माना क्या डेट देखनी है- दो हजार, तीन हजार, चार हजार विनाश तो जब होना होगा, हो जाएगा मैं पहले एवररेडी रहूं। एवररेडी रहना माना आलस्य और अलबेलापन छोड़ना। रॉयल रूप में भी अलबेलापन आ जाता है। अलबेलापन वाला अलर्ट कभी नहीं हो सकता है। जो चाहे वह करके दिखावे, वह नहीं हो सकता है। इसलिए बाबा ने कहा - चाहना और करना एक करो। अभी अपने में लग जाओ। दूसरों को बहुत देख लिया, बहुत सुन लिया। द्वापर से कथाएं सुनीं, अभी भी कथाएं ही सुनेंगे क्या! व्यर्थ बातें क्या हैं? अपने में मगन हो जाओ बस, अभी तो बाबा का एम ही यह है - अपनी घोट तो नशा चढ़े। अपना मनन, अपना शुभ चिन्तन, अपना रियलाइजेशन। समय पूछकर आना नहीं है और समय के ऊपर आधारित होंगे तो रिजल्ट हमारा अच्छा नहीं होगी। इसलिए रियलाइजेशन शब्द को अंडरलाइन करो। रियलाइज करो अपने को, अपने द्वारा औरों को आपे ही पहुंचेगा। बस, अन्तर्मुखी हो जाओ। बाहरमुख से सब देख लिया, अब इससे बेहद का वैराग्य। मैं और मेरा बाबा, बस। बाबा दे रहा है और मैं ले रहा हूं और जो ले रहा हूं, वह नेचरल है दूसरों तक जाएगा। जैसे सूर्य है उससे किरणें नहीं फैलें, यह हो ही नहीं सकता। अगर मेरे में शक्ति है, हमारी शक्ति नहीं फैले - यह हो ही नहीं सकता। जब प्रकृति की लाइट फैलती है, मैं तो रचता हूं क्यों नहीं मेरे वाइब्रेशन लाइट-माइट क्यों नहीं फैलेगी। थोड़ा सा अन्तर्मुखी होकर इस बात के ऊपर हम सभी का अटेन्शन जाना चाहिए और जाएगा तो अपना ही फायदा है। नुकसान भी अपना है, फायदा भी अपना है। **क्रमशः**

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी), पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

> एक होता है मजबूरी से सहन करना, एक होता है बाबा की आज्ञा है कि तुमको सहनशक्ति धारण करना है।

बाबा की आज्ञा है सहनशक्ति धारण करो...

कइयों में सहनशक्ति है, सहन करते रहते हैं। लेकिन सहन करना भी दो प्रकार से होता है। एक होता है मजबूरी से सहन करना, एक होता है बाबा की आज्ञा है कि तुमको सहनशक्ति धारण करना है। यदि हम बाबा की आज्ञा मानते हैं तो उसकी खुशी हमारे अन्दर आ जाती है। मजबूरी से करते हैं तो अन्दर रोते रहेंगे बाहर से सहन करते रहेंगे। उसका फल नहीं मिलेगा, खुशी नहीं होगी। सचमुच बाबा की श्रीमत समझ कर हमने सहन किया तो उसी समय खुशी होती है। भले लोग समझें कि इसकी हार हुई, इसकी जीत हुई है। लेकिन वह हार भी हमको

हमारा सतयुग अभी और इसी क्षण से शुरू होता है...

दिवाली पर सभी को नए जीवन और आने वाले नए युग की शुभकामनाएं दें

मन का आत्मदीप जलाएं, सच्ची दीवाली मनाएं...

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

दिवाली अर्थात् आत्मा की ज्योत का जागना। साल का वही समय फिर आ गया है। जहां सिर्फ घर-घर नहीं, बल्कि पूरी सृष्टि में दिवाली होती है। दिवाली नवीनता का समय है और नए युग की शुरुआत का समय भी है। दिवाली पर हमें घर के साथ मन की सफाई पर भी ध्यान देना चाहिए। जब तक मन की सफाई नहीं होगी, हम श्रीलक्ष्मी का आह्वान नहीं कर पाएंगे। श्रीलक्ष्मी का आह्वान यानी अपने अंदर की पवित्रता, दिव्यता का आह्वान करना।

जहां मन में अपवित्रता होगी वहां दिव्यता कैसे आएगी। जहां पुरानी बातें जमी होंगी, वहां पवित्रता कैसे आएगी। जहां किसी के बारे में कुछ बैर होगा वहां सफाई कैसे होगी! इसलिए मन के कोने-कोने की जांच कर सफाई करें। जैसे-जैसे हम सफाई करेंगे, आत्मा के पुराने संस्कार खत्म होते जाएंगे और नए संस्कार उभरेंगे। सोचने का पुराना तरीका छोड़ते जाएंगे, नया तरीका आता जाएगा। इसीलिए दीवाली में सफाई के साथ नवीनता का महत्व है। हर नई चीज हम दिवाली के समय खरीदते हैं। दिवाली में ऐसा क्या है? क्योंकि जब सफाई होगी तो नवीनता आनी ही आनी है। हम घर की पेंटिंग भी दिवाली पर ही करते हैं। पुराना रंग मिट गया, आत्मा के ऊपर नया रंग आ गया। हर एक को समझना, उसके संस्कार समझना और समझकर उनके प्रति सहानुभूति रखना, ये हमारा नया जीवन जीने का तरीका बन जाता है, यानी हमारे जीवन में नवीनता आ गई।

तब सही मायने में आत्मा का दीप जल गया

हर चीज नई है, हर सोच नई है, हर भावना नई है। बोलने का तरीका, व्यवहार, खाने-पीने का तरीका, काम करने का तरीका, सब नया है, जीवन जीने का तरीका नया है। जब इतनी नवीनता आ जाएगी तब सही मायने में आत्मा का दीप जल गया। जब हम ये सबकुछ करते हैं तो हम जीवन में श्रीलक्ष्मी का आह्वान करते हैं। दिवाली के दिन हम सभी स्वास्तिका बनाते हैं। यानी स्वास्तिका शब्द देखें तो इसका अर्थ स्व का असित्व भी है। मुझ आत्मा का अस्तित्व, परिचय क्या है? स्वास्तिका को मन में बनाइए और देखिए कि वो कैसा होता है। उसके चार भाग बनते हैं, ये जो चार भाग हैं ये मुझ आत्मा की यात्रा समझाते हैं कि मैं आत्मा क्या थी, फिर क्या बनी, फिर कहां गई, आज कहां हूं और मुझे फिर कहां जाना है।

सतयुग में हर आत्मा भरपूर थी...

पहले भाग में हम देखते हैं कि हाथ सीधा है। दूसरे भाग में नीचे की तरफ चला जाता है। तीसरे भाग में हाथ लेने की मुद्रा में आ जाता है और चौथे भाग में हाथ ऊपर हो जाता है। ये सृष्टि का चक्र है। मैं आत्मा जब इस सृष्टि पर आती हूं तो मैं सतयुगी आत्मा हूं। सृष्टि के उस समय को स्वर्ग, सतयुग कहते हैं। सतयुग में हर आत्मा भरपूर थी, सबको दुआएं देने वाली थी। दूसरा भाग यानी त्रेतायुग में मेरे देने की शक्ति घटनी शुरू हो गई तो हाथ नीचे की तरफ चला गया। आत्मा की शक्ति जैसे-जैसे कम होने लगती है तो उसकी देने की शक्ति कम होती जाती है। तब आत्मा मांगना शुरू कर देती है। सृष्टि का तीसरा युग यानी द्वापरयुग, जहां हाथ लेने की मुद्रा में आ जाता है और हम मांगना शुरू कर देते हैं। तब आत्मा की शक्ति और घट जाती है। फिर हम चौथे युग में पहुंच जाते हैं। जो है कलियुग। वहां हाथ ऊपर की ओर हो जाता है। यानी हम एक-दूसरे के ऊपर हाथ उठाना शुरू कर देते हैं।

लक्ष्मी अर्थात् मेरे जीवन का लक्ष्य है सदा देते रहना। मैं देने वाली आत्मा हूं...

अब सबसे महत्वपूर्ण बात है कि इस कलियुग के बाद वापस सतयुग आ रहा है। सृष्टि का वो समय चल रहा है जहां घोर कलियुग है। लेकिन घोर रात्रि के बाद सवेरा होना ही है। तो हम सबको मिलकर इस सृष्टि का परिवर्तन करना है। सिर्फ नया साल नहीं आना है। इस सृष्टि पर नया युग आना है। वो नया युग हम सबको मिलकर लाना है। इसलिए हम सबको मन, बुद्धि से देने वाला हाथ रखना है। इससे हमारे संस्कार बदल जाएंगे, मांगने के संस्कार खत्म होंगे, नाराज, दुःखी होने के संस्कार खत्म होंगे। जब देने वाला हाथ बन जाता है तब श्रीलक्ष्मी का आह्वान होता है। लक्ष्मी मतलब मन का लक्ष्य, हमारे जीवन का उद्देश्य। जो भी हम कर्म करें, उसमें जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। मतलब हर कर्म करते हुए हम सबको कुछ देते रहें। जब देते रहेंगे तो आत्मा भरपूर रहेगी। लक्ष्मी अर्थात् मेरे जीवन का लक्ष्य है सदा देते रहना। मैं देने वाली आत्मा हूं। मैं कलियुग नहीं सतयुग लाने वाली आत्मा हूं। जब उस स्व अस्तित्व में स्थित रहकर हर कार्य करेंगे तो हर कार्य शुभ होगा। जीवन में श्रीलक्ष्मी का आह्वान होगा और सृष्टि पर स्वर्ग आएगा। दिवाली के दिन सभी को नये जीवन की और आने वाले नए युग की शुभकामनाएं देनी है। हमारा सतयुग अभी और इसी क्षण से शुरू होता है। फिर दिवाली एक दिन की नहीं होगी बल्कि हर रोज, पूरी सृष्टि पर दिवाली होगी।

राजयोग मेडिटेशन से आती है मन और बुद्ध को नियंत्रित करने की कलाः राजयोगिनी जयंती दीदी

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय शांतिवन में चार दिवसीय प्रशासक महासम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान। प्रभावशाली प्रशासन और माइंड मैनेजमेंट के गुर सीखने के लिए भारत सहित नेपाल से दो हजार से अधिक प्रशासक, सरकारी अधिकारी और मैनेजर्स ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय पहुंचे। शांतिवन के डायमंड हाल में प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा चार दिवसीय प्रशासक महासम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी जयंती दीदी ने कहा कि परमात्मा ने हमें सिखाया है कि यदि हमारा खुद पर प्रशासन होगा तो हम बाहरी प्रशासन बेहतर तरीके से कर पाएंगे। सर्वोच्च सत्ता परमात्मा से संबंध जोड़ने के बाद आत्मा सर्व शक्तियों से परिपूर्ण हो जाती है। इससे हम जो भी कार्य करते हैं उसमें निश्चित रूप से सफलता मिलती है। मेडिटेशन से मन और बुद्ध को नियंत्रित करने की कला सीख जाते हैं।

नई दिल्ली से आईं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की संयुक्त सचिव ए. धनलक्ष्मी ने कहा कि प्रशासक को उसकी आन्तरिक शक्ति उसे अच्छा प्रशासक बनाने में मदद करती है। प्रशासक को भावनात्मक रूप से सशक्त होना चाहिए। मध्यप्रदेश विधानसभा के प्रमुख सचिव डॉ. अवधेश प्रताप सिंह ने बताया कि राजयोग मेडिटेशन से विधानसभा में तनाव के क्षणों में निर्णय लेने में सहायता मिलती है। कोई भी निर्णय करते समय शांतचित्त होकर निर्णय करें। प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी बीके आशा दीदी ने कहा कि प्रशासन करना एक कला है। एक अच्छे प्रशासक में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और अनुशासन का होना जरूरी है। उसके अन्दर मानवता और धैर्यता भी जरूरी है। बिहार के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के अतिरिक्त सचिव विभूति रंजन चौधरी, अजमेर के डीआरएम राजीव धनखेर, जयपुर सबजोन की निदेशिका बीके पूनम दीदी, मुख्यालय संयोजक बीके हरीश भाई, कर्नाटक की बीके वीणा दीदी, बीके शैलेश भाई ने भी संबोधित किया।

शिव आमंत्रण, जबलपुर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव स्मृति भवन के आध्यात्मिक सभागार में शिक्षकों के सम्मान हेतु एक संगोष्टी का आयोजन किया गया। इसमें जिला शिक्षा अधिकारी घनश्याम सोनी, रत्ना श्रीवास्तव (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अखिल भारतीय कायस्क महासभा), प्रदेश अध्यक्ष केके श्रीवास्तव, डॉ.श्याम जी रावत, बीके भावना दीदी ने अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, महेसाणा, गुजरात। भारत के गांव गोपाल, गउ एवं गोपी से बनी मूल्यों से भरी संस्कृति थी। उस समय रास्तों पर एवं घरों में लाइट नहीं थी किन्तु सभी की ज्योत सद्गुणों से भरपूर होने के कारण पूरा गांव जगमगाता था। सभी सुखी थे। आज सब कुछ होते हुए भी गाँवों की स्थिति दयनीय हो गई है। गाँवों को फिर से महान एवं समृद्ध बनाना हो तो आवश्यकता है आध्यात्मिक मूल्यों की'' ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीके सरला दीदी ने यह उद्गार नवीन सेवा योजना 'मेरा गांव, बने महान' के शुभारंभ अवसर पर व्यक्त किये। प्रभाग द्वारा सितम्बर एवं अक्टूबर में 'मेरा गाँव, बने महान' योजना अंतर्गत पूरे गुजरात के गाँवों के सर्वांगीण विकास के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

साइंटिस्ट, इंजीनियरिंग और आर्किटेक्ट विंग का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

कार्य और जीवन में संतुलन से मिलेगी श्रेष्ठ उपलब्धि: रॉय

शिव आमंत्रण, आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शांतिवन के डायमंड हाल में साइंटिस्ट, इंजीनियरिंग और आर्किटेक्ट विंग चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देशभर से पांच हजार से अधिक वैज्ञानिक, इंजीनियर, आर्किटेक्ट और निर्माण से जुड़े अधिकारी, कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्य और जीवन में श्रेष्ठ संतुलन से श्रेष्ठ उपलब्धि विषय पर आयोजित सम्मेलन में दुर्गापुर स्टील प्लांट के पूर्व मैनेजिंग डायरेक्टर निलोपत रॉय ने कहा कि हम कितना भी ज्ञान सुन लें लेकिन जब तक जीवन में धारण नहीं करेंगे तो बदलाव नहीं आएगा। मन में शांति नहीं आएगी। ज्ञान का मतलब है कि जीवन में शांति, आनंद है। पहले मुझे बहुत गुस्सा आता था लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ में जुड़ने के बाद राजयोग के अभ्यास से मेरा मन शांत हो गया। गुस्सा दूर हो गया। जीवन में संतुलन बहुत आवश्यक है। कार्य और जीवन में संतुलन से ही श्रेष्ठ उपलब्धि मिलेगी।

कर्नाटक बेलगाव के वेगा ग्रुप के सहसंस्थापक सुभाष चांडक ने कहा कि जब पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आए तो एक दिव्यता की अनुभूति हुई। राजयोग मेडिटेशन के बारे में जानकार बहुत खुशी हुई। अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि भारत विश्वगुरु तभी बनेगा जब हमारा जीवन आदर्श बनेगा। साइंटिस्ट, इंजीनियरिंग और आर्किटेक्ट विंग के अध्यक्ष बीके मोहन सिंघल भाई ने स्वागत भाषण दिया।

विंग की उपाध्यक्ष भिलाई की बीके आशा दीदी ने कहा कि जीवन में बिना बैलेंस के ब्लेसिंग नहीं हो सकती है। ब्लेसिंग के बिना हम उच्च शिखर पर नहीं पहुंच सकते हैं। एक है पुरुषार्थ, दूसरा है ब्लेसिंग। ब्लेसिंग मिलती है बैलेंस से। जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन बहुत आवश्यक है। संतुलन ही हमें शिखर पर पहुंचाता है। नेपाल के एनएसईटी के अध्यक्ष प्रो. अमोदमनी दीक्षित, चंडीगढ़ की बीके कविता दीदी, बीके अंजली दीदी, बीके अरुण साहू ने भी अपने विचार व्यक्त किए। पानीपत की बीके ज्योति दीदी ने राजयोग मेडिटेशन से शांति की अनुभूति कराई। संचालन मनेंद्रगढ़ की बीके माधुरी दीदी ने संचालन किया। कर्नाटका के नृत्यश्री नृत्यालय की बालिकाओं ने सुंदर नृत्य की प्रस्तुति दी।

विदेश समाचार

शिव आमंत्रण,मास्को, रूस। ब्रह्माकुमारी मास्को, रूस, बेलारूस, लातविया, एस्टोनिया, कज़ाकिस्तान और मंगोलिया के 25 शहरों से पहुंची ब्रह्माकुमारी बहनों का स्नेह मिलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर आध्यात्मिक शक्तियां ईश्वर की विरासत हैं विषय पर विशेष रिट्रीट का आयोजन किया गया। बीके चक्रधारी दीदी और बीके सुधा दीदी, बीके संतोष दीदी ने बीके परिवार को विशेष ध्यान सत्र कराए और आत्मिक समृद्धि का संदेश दिया।

शिव आमंत्रण, लंदन। भारतीय उच्चायोग में आयोजित राष्ट्रीय खेल दिवस समारोह में ग्लोबल कोऑपरेशन हाउस से ब्रह्माकुमारीज़ की सिस्टर दीप्ति ने सहभागिता की। इस अवसर पर गुजरात सरकार के खेल एवं युवा सेवा मंत्री हर्ष सांघवी विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सांघवी के नेतृत्व में आए प्रतिनिधिमंडल ने अहमदाबाद में कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 (सौवां संस्करण) की मेजबानी का भारत का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। सिस्टर दीप्ति के साथ ब्रह्माकुमारीज़ यूके के युवा समूह के सदस्य भी उपस्थित रहे। भारतीय उच्चायुक्त विक्रम दोरईस्वामी एवं दीपक चौधरी ने सभी का स्वागत किया।

शिव आमंत्रण, मॉस्को, रुस। ड्रीम आइलैंड एम्यूज़मेंट पार्क में 10वां इंडिया डे सेलिब्रेशन आयोजित हुआ। उत्सव भारतीय पब्लिक एसोसिएशन 'सीता' ने मॉस्को सरकार के डिपार्टमेंट ऑफ एक्सटर्नल इकोनॉमिक एंड इंटरनेशनल रिलेशंस तथा डिपार्टमेंट ऑफ कल्चर के सहयोग से किया गया। ारत के स्वतंत्रता दिवस के पूरक रूप में मनाए जाने वाले इस उत्सव का उद्देश्य भारत के इतिहास, परंपराओं और संस्कृति को प्रस्तुत करना तथा भारत और रूस की पीढ़ियों से चली आ रही मित्रता को और प्रगाढ़ बनाना है। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ 10 वर्षों से सक्रिय भागीदार रही है।

शिव आमंत्रण, ग्वांगझोउ, चीन। भारतीय वाणिज्य दूतावास द्वारा होटल शांगरी-ला में भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस पर भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। महावाणिज्य दूत शंभु हक्की ने अतिथियों का स्वागत करते हुए स्वतंत्रता दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। ग्वांगझोउ कमेटी के CPPCC के उपाध्यक्ष गोंग हैजिए और गुआंगडोंग विदेश मामलों के कार्यालय की उप महानिदेशक चियान होंगजिए विशेष रूप से उपस्थित रहीं। ब्रह्माकुमारी की ओर से बीके सपना दीदी ने भारत की प्राचीन आध्यात्मिक विरासत एवं ध्यान पर अपने विचार व्यक्त किए।

युवाओं को अध्यात्म से जोड़ रहा डिवाइन यूथ फोरम

शिव आमंत्रण, रायपुर। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग की कार्ययोजना डिवाइन यूथ फोरम के तहत शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर में नई उमंग, नई तरंग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इसमें युवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके कृति दीदी, कलकत्ता इस्ट जोन की बीके कमला दीदी, भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष राहुल योगराज टिकरिहा, छत्तीसगढ़ राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष अमरजीत छाबड़ा, युवा उद्यमी आदित्य मूंदड़ा, बीके सरिता दीदी, रायपुर संचालिका बीके सविता दीदी, वरिष्ठ पत्रकार प्रियंका कौशल ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमारी छाया दीदी ने किया और ब्रह्माकुमारी सरिता दीदी ने आभार व्यक्त किया।

शिव आमंत्रण, पनामा। ब्रह्माकुमारीज़ पनामा सेवाकेंद्र पर पीस विलेज, न्यूयॉर्क से पधारी सिस्टर कला का विशेष स्वागत किया गया। इस दौरान भारतीय राजदूतों सहित अनेक विशिष्ट व्यक्तियों को राजयोग ध्यान के बारे में बताया। वहीं स्वतंत्रता दिवस पर भारतीय राजदूत डॉ. सुमित सेठ के साथ ध्वजारोहण समारोह एवं सेवा गतिविधियों में भागीदारी की गई। इस अवसर पर विभिन्न आयोजकों के सहयोग से पार्क में योग कार्यक्रम भी संपन्न हुए।

शिव आमंत्रण, रुस। भारत और रूस के बीच सम्मान, विश्वास और प्रेम को अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से व्लादिवोस्तोक में भारतीय महावाणिज्य दूतावास तथा प्रिमोर्स्की क्षेत्र के संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से "रामायण महाकाव्य से प्राचीन भारत की किंवदंतियां और मिथक" विषय पर बाल कला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भारतीय महावाणिज्य दूत सिद्धार्थ गौरव ने युवा विजेताओं को पुरस्कृत किया। व्लादिवोस्तोक केंद्र की समन्वयक बीके अल्ला सदोवनिका ने संबोधित किया।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य 150 रुपए तीन वर्ष 450 रुपए
आजीवन 3500 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8538970910, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 9471854331
Scan To Pay

ब्रह्माकुमारीज़ का ये मात्र एक एमओयू नहीं बल्कि सामाजिक मूल्यों एवं संस्कारों की पहचान कराता है: केंद्रीय मंत्री

केंद्रीय मंत्री ने किया गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन अभियान का शुभारंभ

गुरुग्राम, हरियाणा। पारिवारिक सम्बन्धों का जो दृश्य भारत में देखने को मिलता है, वो अन्य किसी भी देश में नहीं है। उक्त विचार केंद्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र सिंह, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार ने व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के समाज सेवा प्रभाग द्वारा ओम शांति रिट्रीट सेंटर में संगम-गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सामाजिक जीवन अभियान के शुभारम्भ के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि उन्होंने ये बात कही।

दादी प्रकाशमणी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि ये मात्र एक कार्यक्रम नहीं बल्कि एक विचार है। ये कार्यक्रम बुजुर्गों को सम्मान सहित गौरवपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दे रहा है। दादा-दादी, नाना-नानी ही अपने पोते-पोतियों को पुरातन कहानियों के माध्यम से संस्कार प्रदान करते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का भारत सरकार के साथ ये मात्र एक एमओयू नहीं बल्कि सामाजिक मूल्यों एवं संस्कारों की पहचान कराता है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एक विश्वव्यापी आध्यात्मिक संगठन है। जो इस प्रकार के अभियान को लोगों के बीच बेहतर ढंग से पहुंचा सकता है।

भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के सचिव अमित यादव ने कहा कि इस अभियान की शुरुआत ब्रह्माकुमारीज़ संस्था एवं भारत सरकार के साथ हुए मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग(एमओयू) के तहत हुई।

ओआरसी में दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते केंद्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार।

ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी ने कहा कि आज ग्रैंड पेरेंट्स दिवस मनाने की आवश्यकता है। हमें बुजुर्गों की भावनाओं का सम्मान करना जरूरी है। दुनिया में केवल मात पिता ही ऐसे हैं जो बच्चों की खुशी में खुश होते हैं। उनको कुछ नहीं चाहिए। उन्हें चाहिए तो सिर्फ बच्चों का स्नेह और समय। उन्होंने सभी से प्रतिज्ञा कराई कि कोई भी अपने बुजुर्गों को वृद्धावस्था आश्रम नहीं भेजेंगे। संस्थान द्वारा अभियान के लिए एक गीत की भी लॉन्चिंग हुई। जिसे बीके चांद ने अपने स्वर प्रदान किए। समाज सेवा प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी बीके प्रेम सिंह, ग्लोबल हॉस्पिटल माउंट आबू के वैज्ञानिक डॉ. रश्मिकांत आचार्य ने भी अपने विचार रखे। प्रभाग की दिल्ली की संयोजिका राजयोगिनी बीके आशा दीदी, ने सभी को राजयोग की गहन अनुभूति कराई। संचालन बीके उर्मिल दीदी एवं बीके सुनैना दीदी ने किया। कार्यक्रम में 1800 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की।

मुरादाबाद में मीडिया सेमीनार आयोजित

शिव आमंत्रण, मुरादाबाद, उप्र। सिविल लाइंस स्थित ब्रह्मकुमारीज़ आत्मज्योति भवन में 'शांति, एकता और विश्वास को बढ़ावा देने में मीडिया की भूमिका' विषय पर मीडिया सेमिनार का आयोजन किया गया। मीडिया विंग के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. बी.के. शांतनु भाई, कुंदरकी विधायक ठाकुर रामवीर सिंह, प्रेस क्लब के उपाध्यक्ष शिशिर गुप्ता, पंकज त्रिपाठी, एक्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर, टीवी 9 दिल्ली ने संबोधित किया। मुरादाबाद की निदेशक बीके आशा दीदी ने अपने आशीर्वचन दिए।

शिक्षाविदों का सम्मान समारोह संपन्न

शिव आमंत्रण, टोंक, राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग भवन में शिक्षाविदों का सम्मान समारोह एवं शिक्षक ज्ञान संस्कार एवं प्रेरणा के स्रोत विषय पर संगोष्ठी रखी गई। इसमें जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक), अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, प्राचार्य, सहायक आचार्य, प्रिंसिपल एवं शिक्षा विभाग के अधिकारी कर्मचारी सहित बड़ी संख्या में शिक्षक शिक्षिकाएं मौजूद रहे। सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी अपर्णा दीदी ने सभी शिक्षकों का सम्मान किया। बीके ऋतु दीदी ने संस्थान की सेवाओं के बारे में बताया।

विचारों की एकाग्रता से स्मरण शक्ति, आत्मविश्वास बढ़ता है

बेगूसराय, बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु पसंद भवन द्वारा बरौनी स्थित एनसीसी छावनी में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें मुंबई से पधारे ईवी डॉ. बीके स्वामीनाथन ने माइंड पावर एवं थॉट कॉन्सेंट्रेशन विषय पर कैडेट्स को मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा मनुष्य का मन ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। यदि हम अपने विचारों को सकारात्मक दिशा में केंद्रित करना सीख लें तो असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। विचारों की एकाग्रता से स्मरण शक्ति, आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता मजबूत होती है। नियमित राजयोग ध्यान मन को स्थिर और विचारों को शुद्ध बनाए रखता है। कार्यक्रम में महिला एवं पुरुष मिलाकर लगभग 500 कैडेट्स सम्मिलित हुए। लेफ्टिनेंट अर्चना कुमारी, लेफ्टिनेंट अजीत कुमार, लेफ्टिनेंट तुषार कुमार, थर्ड ऑफिसर गीतांजलि कुमारी, जी.सी.आई. दीक्षा कुमारी, पूजा कुमारी, ए.एन.ओ. संजय कुमार तथा सी.टी.ओ. करिश्मा कुमारी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। सभी अधिकारियों एवं कैडेट्स ने डॉ. स्वामीनाथन के विचारों को जीवन में आत्मसात करने का संकल्प लिया।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संयुक्त संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

क्षमा: मन की गांठें खोलने की जादुई शक्ति

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। संस्कृत का प्रसिद्ध श्लोक है... क्षमा वीरस्य भूषणम अर्थात् क्षमा वीरों का आभूषण है। दुर्बल व्यक्ति किसी को क्षमा नहीं कर सकता है। आत्मबल से ओतप्रोत, संवेदनशील, करुणा, दया, सत्य, अहिंसा और प्रेम से भरपूर व्यक्तित्व ही क्षमा कर सकता है और क्षमा मांग सकता है। संबंधों को मधुर, स्नेही और प्रेममय बनाने के लिए क्षमा कर देना और क्षमा मांग लेना ऐसी जादुई शक्ति है जो मन की गांठों को खोलकर जीवन में नव ऊर्जा का संचार कर देती है। मन के तमस को मिटाकर उसे पश्चाताप, क्रोध, बैर, द्वेष, ईर्ष्या से मुक्त कर आनंद से भाव-विभोर कर देती है। क्षमा में ही आनंद है, सुख है, शांति है और संतोष है। क्षमा ही जीवन का राग है, श्रृंगार है, शोभा है।

अध्यात्म के पथिक के लिए क्षमा सबसे उत्तम गुण है, जो क्षमा करना जानता है वही ईश्वर के समीप होता है। ऐसा व्यक्ति परमात्मा के वरदानों, दुआओं और मदद का पात्र बन जाता है। जग में यश, कीर्ति और मान-सम्मान पाता है। हमारी जीवन यात्रा में नित नए अच्छे-बुरे अनुभव जुड़ते हैं लेकिन क्षमा हमें सिखाती है कि जीवन में आगे की यात्रा खुशी, उमंग-उत्साह और मधुर स्मृतियों के साथ व्यतीत करना है तो अतीत के बोझ को उतारकर उसे बिसारना होगा। चित्त बदले के भाव, परनिंदा, जलस के भाव से भरा तो है उसमें भविष्य की सुनहरी तस्वीर का अक्स नहीं खींच सकते हैं। शांत, प्रफुल्लित, आशावादी चित्त में ही भविष्य के सुनहरे सपनों को बुना जा सकता है।

गलतियां और भूलें होना मानवीय स्वभाव

गलतियां, भूलें होना मानवीय स्वभाव है। कई बार हमारे कर्मों का ध्येय किसी को कष्ट देना नहीं होता है लेकिन उसके परिणाम स्वरूप किसी व्यक्ति को परिस्थितिजन्य दुख पहुंच जाता है। कई बार बातचीत में हमारे कहने का भाव वह नहीं होता है जिसे सामने वाला समझ लेता है, ऐसी स्थिति में आपसी मतभेद हो जाते हैं। आज पारिवारिक संबंधों में तनाव, कटुता, द्वेष का कारण ही है कि हम सामने वाले की गलतियों को चित्त पर रखे रखते हैं। उन्हें बिसारते ही नहीं है। जब किसी की गलतियों को हृदय से माफ कर देते हैं, क्षमा कर देते हैं तो उसके बाद मन को जो असीम आनंद, संतोष और सुकून की अनुभूति होती है उसे वही व्यक्ति महसूस कर सकता है। इससे सामने वाले का हमारे प्रति सम्मान और आदर का भाव बढ़ जाता है। परिवार में यदि सदस्य एक-दूसरे से क्षमा मांगना और क्षमा करना जीवन में अनिवार्य से शामिल कर लें तो घर-घर स्वर्ग बन जाएंगे। रिश्तों में फिर से गर्माहट, ताजगी, स्नेह और मधुरता आ जाएगी।

क्षमा को धर्मशास्त्रों में बताया है अत्यंत महान गुण-

धर्मशास्त्रों में क्षमा को अत्यंत दुर्लभ, साधना की शक्ति और मोक्ष का मार्ग बताया गया है। मनुस्मृति में लिखा है कि क्षमा धर्मस्य मूलं अर्थात् क्षमा ही धर्म की जड़ है। धर्म अर्थात् धारण करना। जब हम कोई महान संकल्प के साथ कोई व्रत धारण करते हैं तो उसके मार्ग में बाधाएं आना स्वाभाविक है। ऐसे में उस व्रत को पूर्ण करने, उसे साधने के लिए क्षमा का गुण अतिआवश्यक है। महाभारत में भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से कहा- क्षमा धर्मः क्षमा यज्ञः क्षमा वेदाः तथैव च। क्षमा शौर्यं बलं चैव क्षमायां किं न विद्यते॥ अर्थात् क्षमा ही धर्म है, क्षमा ही यज्ञ है, क्षमा ही वेद है, क्षमा ही शौर्य और बल है। क्षमा में ऐसा क्या है जो न हो!। इस तरह उन्होंने क्षमा को सबसे ऊपर रखते हुए वीर पुरुष के लिए सबसे जरूरी बताया।

रामचरितमानस में तुलसीदासजी लिखते हैं कि क्षमावान को साधु सुजाना अर्थात क्षमा करने वाला ही सच्चा सज्जन है। जैन धर्म में तो हर वर्ष क्षमावाणी पर्व विशेष रूप से मनाया जाता है। इसका सूत्र वाक्य है- मिच्छामि दुक्कडम् अर्थात मैंने यदि किसी को मन-वचन-कर्म से दुःख पहुंचाया हो तो क्षमा चाहता हूं। जैन आगम कहते हैं कि क्षमा ही आत्मा को कर्मबंधन से मुक्त करने का मार्ग है। महात्मा बुद्ध ने कहा है कि क्रोध को क्रोध से शांत नहीं किया जा सकता है, केवल क्षमा और प्रेम से ही शांति आती है। क्षमा करुणा की आधारशिला है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥ अर्थात् सब सुखी हों, सब रोगमुक्त हों, सबका जीवन मंगलमय हो और सबको कल्याण की दृष्टि प्राप्त हो, कोई भी प्राणी दुख का भागी न बने। जब हमारी अंतर्रात्मा में यह भाव गहराई से समाहित हो जाता है जीवन की असीम ऊर्जा संचित होने लगती है, आत्मबल बढ़ने लगता है। यह तभी संभव है जब हमारे मन में, हृदय में संसार के प्राणी मात्र के प्रति दया, करुणा और प्रेम का भाव होगा।

बच्चे क्षमा करना ही सच्ची महानता है-

परमात्मा के महावाक्य हैं- बच्चे! क्षमा करना ही सच्ची महानता है। क्षमा से दिल का बोझ हल्का होता है और संबंधों में मधुरता आती है। जिसने क्षमा करना सीख लिया, उसने कर्मबंधन काटने का रास्ता जान लिया। क्षमा करने वाला ही सच्चा विजयी है, क्योंकि वह स्वयं को भी दुख से मुक्त करता है और दूसरों को भी मुक्त करता है। परमात्मा कहते हैं- बच्चे! किसी के दोष देखने और पकड़ने से अपने संस्कार भारी हो जाते हैं। इसलिए क्षमा की शक्ति को धारण करो। जैसे मैं निरंतर क्षमाशील और दयालु हूं, वैसे ही तुम बच्चों को भी क्षमाशील बनना है। क्षमा का अर्थ है- पुराना हिसाब चुकता करना और नए संबंध को प्रेम से आगे बढ़ाना। क्षमा कर देने से आत्मिक शक्ति बढ़ती है और दूसरों को भी परिवर्तन की प्रेरणा मिलती है। तो आइए, जिन रिश्तों में मन की गांठें बन गई हैं उन्हें क्षमा करने और क्षमा मांगने की जादुई शक्ति से सदा-सदा के लिए खोलते हैं। रिश्तों को फिर से संवारते हैं। इस जादुई शक्ति के प्रयोग से रिश्तों की बगिया फिर से हरियाली से भरपूर और संपन्न बन जाएगी। जीवन आनंदमय, मंगलमय और प्रेममय होकर आदर्शमूर्त बन जाएगा।

शारीरिक स्वास्थ्य के साथ भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी उतना ही ध्यान देना होगा

खुशी को समझें, उसे अपने जीवन में धारण करें, मैं खुश कैसे रह सकता हूं, इन बातों पर विचार करें। हमारी खुशी कहीं बाहर से मिलेगी ? या किसी और के साथ संबंधों में मिलेगी या किसी भौतिक प्राप्ति से मिलेगी, लेकिन सच यही है कि खुशी मेरे अपने ही अंदर है।

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज की टीवी आइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

जीवन प्रबंधन

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

जीवन में हम बहुत सी चीजें देखते हैं और उनसे बहुत कुछ प्राप्त भी करते हैं। हमारे कई सपने होते हैं जो जीवन से जुड़े होते हैं परिवार से जुड़े होते हैं, बच्चों से जुड़े होते हैं अपने कैरियर को लेकर के होते हैं, उन्हें प्राप्त करते जाते हैं। हर प्राप्ति हमें कहीं न कहीं संतुष्टि अवश्य देती है और खुशी का एहसास कराती है। लेकिन आज हम देख रहे हैं कि जीवन में उन सभी आशाओं से गुजरते-गुजरते कहीं न कहीं हमारी खुशी कम होती जा रही है। खुशी मिली और अगले ही पल चली भी गई। फिर हम उसे दोबारा ढूंढने की कोशिश करते हैं।

खुशी क्या है? उसे समझें और अपने जीवन में धारण करें। मैं खुश कैसे रह सकता हूं? क्या मैं कभी यह जान पाता हूं कि वो कौन सी ऐसी बातें हैं जो मुझे खुशी देती हैं? खुशी कहीं बाहर से मिलेगी, किसी और के साथ संबंधों में मिलेगी, किसी भौतिक प्राप्ति से मिलेगी या फिर मेरे अपने ही अन्दर है!

खुशी कहीं न कहीं मिलती है, फिर चली जाती है, फिर मिलती है और फिर चली जाती है। सारे दिन में कई परिस्थितियां आती हैं, सारा दिन क्या है? यह परिस्थितियों की एक शृंखला है जो लगातार चलती ही रहती है। जैसे कोई फिल्म चल रही हो। एक दृश्य के बाद दूसरा दृश्य आता है। कोई मेरे पक्ष में होगा तो कोई दृश्य मेरे पक्ष में नहीं होगा। इसी प्रकार कोई व्यक्ति मेरे पक्ष में होगा तो कोई नहीं भी होगा। अर्थात् जैसे मैं चाहती हूं, वैसे कोई चलेगा और कोई नहीं भी चलेगा। इसका मुख्य कारण यही है कि हमारी खुशी व्यक्ति और लोगों के ऊपर निर्भर कर रहे हैं। इसलिए खुशी मिलती है फिर चली जाती है। अर्थात् एक दृश्य आया बहुत अच्छा, बच्चे समय पर सुबह उठ गए, तैयार भी हो गए और स्कूल चले भी गए तो इससे मुझे खुशी मिली। दूसरा दृश्य आया कि बच्चे समय पर तैयार तो हो गए लेकिन उनको लेने के लिए बस ही नहीं आई तो मुझे गाड़ी से छोड़ने के लिए जल्दी-जल्दी जाना पड़ा।

पहले वाले दृश्य में खुशी थी, लेकिन दूसरे दृश्य में खुशी गायब हो गई। फिर अगला दृश्य आता है कि समय पर फिर भी स्कूल में पहुंच तो गए, बहुत अच्छा लेकिन अगला दृश्य में पहुंचते ही याद आया कि जो गृहकार्य किया था वो नोटबुक तो घर पर ही रह गई। ये सारे ऐसे दृश्य हैं जो मेरे मानसिक संतुलन पर प्रभाव डालते हैं। क्योंकि मैंने अपने मन का नियंत्रण पूरी तरह से जैसे-जैसे परिस्थितियों के हाथ में दिया हुआ है। तब मैंने सोचा कि ये सब तो स्वाभाविक ही है कि जैसे-जैसे परिस्थिति और लोग बदलते जाएंगे, मेरी सोच, मेरी अनुभूति उनके अनुसार बदलती जाएगी। इसलिए हमें कभी खुशी मिलती है तो कभी गम मिलता है और हम उसे स्वीकार कर लेते हैं।

हम अपने मन की शक्ति को परिस्थितियों को देते गए...देते गए... परिस्थितियां दिन-प्रतिदिन चुनौतीपूर्ण होती गईं। कभी अनुकूल, कभी अशांति का जो प्रतिशत था वह बढ़ता गया। जिसके कारण हमारे जीवन में स्थिरता कम और अशांति ज्यादा हो गई। सब परिस्थितियों को संभालने के लिए शारीरिक शक्ति भी चाहिए। लेकिन पहले मैं अपनी शारीरिक क्षमता को देखूं या परिस्थिति को संभालूं? तो जवाब मिलता है कि शारीरिक क्षमता के प्रति कुछ नहीं सोचना है, मुझे तो परिस्थिति पर ही सारा ध्यान केंद्रित करना है।

भावनात्मक स्वास्थ्य का ध्यान रखना जरूरी

मुझे यह पता है कि मैं शारीरिक क्षमता से ही परिस्थिति को हैंडल कर सकती हूं। इसके लिए हमें शरीर को समय पर भोजन भी देना चाहिए। आप एक दिन भोजन छोड़ देगें, दो दिन छोड़ देंगे, लेकिन कितने दिन तक छोड़ेंगे! यदि हमारा स्वास्थ्य अच्छा होगा, तभी हम ठीक तरह से काम कर पाएंगे। लेकिन कहीं न कहीं हमने भावनात्मक स्वास्थ्य को शारीरिक स्वास्थ्य से अलग कर दिया है। अगर उसको भी हम जीवन में उतनी ही प्राथमिकता दें जितना कि शारीरिक स्वास्थ्य को देते हैं तब हम जीवन की यात्रा में ठीक तरह से चल पाएंगे। आजकल लोग शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में इतना क्यों सोच रहे हैं? क्यों इतना ध्यान रखा जा रहा है? आजकल भावनात्मक दबाव इतना ज्यादा है कि कोई न कोई समस्या शरीर के साथ चलती ही रहती है। इसका कारण यह है कि हमने आत्मा का ध्यान ही नहीं रखा।

अगर हम आत्मा का भी ध्यान रखें तो मन पर जो इतना ज्यादा दबाव है, इसके लिए मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। आप व्यायाम कर रहे हैं उस समय आप स्वयं को चेककर जांच करें कि हमारे सोच की गुणवत्ता क्या है? हम सेहतके लिए घूम रहे हैं लेकिन साथ-साथ नकारात्मक विचार उत्पन्न हो रहे हैं। इस विचार का असर सिर्फ हमारे मन पर ही नहीं बल्कि पूरे शरीर पर पड़ता है। इसलिए हमें विचारों का चयन सोच-समझकर करना चाहिए।

इमोशनल हेल्थ को देना होगा महत्व...

एक है शारीरिक रुप से शक्तिहीन होना और एक है भावनात्मक रुप से शक्तिहीन होना। अगर हम भावनात्मक स्वास्थ्य इमोशनल हेल्थ को भी उतना ही महत्व दें कि ये सब परिस्थितियां और भावनात्मक स्वास्थ्य अलग-अलग नहीं है। यदि मैं भावनात्मक रुप से स्वस्थ हूं तो परिस्थितियों को बहुत ही सरलता से पार कर सकती हूं। पहले हम क्या करते हैं, परिस्थिति को संभालने के बारे में सोचते हैं। यहां पर एक बात और आती है कि हमने शारीरिक स्वास्थ्य के लिए व्यायाम करना शुरु किया। ये सोचकर कि ये स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। एक जागरुकता आनी शुरु हुई है कि मुझे क्या खाना, क्या नहीं खाना है। किस समय पर खाना है और उसके लिए कितना व्यायाम करने की आवश्यकता है।

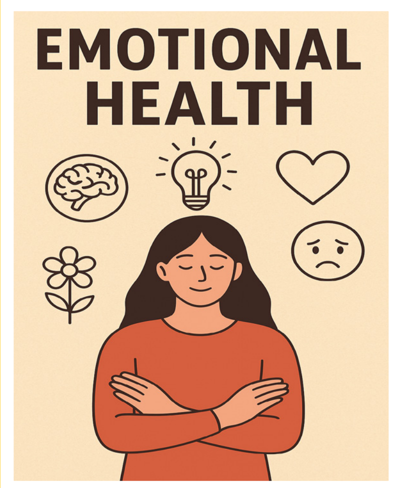

हमें अपनी आंतरिक शक्तियों को बढ़ाना चाहिए

जब तक हम यह महसूस नहीं करेंगे कि शारीरिक स्वास्थ्य पर भावनात्मक स्वास्थ्य का कितना गहरा प्रभाव पड़ता है, तब तक हम स्थिर और शांतचित्त नहीं रह सकते हैं। सुखमय और आनंदमय जीवन नहीं जी सकते हैं, इसलिए हमें अपनी आंतरिक शक्तियों को बढ़ाने की मेहनत करनी चाहिए।

समस्या- समाधान

सभी के लिए रखें कल्याण की भावना

अब समय केवल कमाई का है इसलिए अब नया हिसाब-किताब बनाना बंद करो और हर आत्मा के प्रति रहम, प्रेम और कल्याण की भावना रख मन्सा सेवा करो।

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

- राजयोगी बीके सूरज भाई,
माउंट आबू

योग बल द्वारा अन्य आत्माओं की पालना करने, रहम दिल से, शुभ भावना शुभ कामना संपन्न संकल्प हर आत्मा के कल्याण प्रति निस्वार्थ और निमित्त भाव से करने से यह उन आत्माओं को डायरेक्ट टच होगा। उनको एक साक्षात्कार जैसा अनुभव होगा। अनुभव करेंगे कोई फरिश्ता आकर मुझे कुछ बोल रहा है। यह अंतः वाहक शरीर द्वारा सेवा योग बल से ही कर सकते है। जबकि अभी यह सृष्टि रूपी झाड़ को परिवर्तन होना ही है। तो झाड़ के अंत में क्या रह जाता है? आदि भी बीज, अंत भी बीज ही रह जाता है। अभी इस पुराने वृक्ष के परिवर्तन के समय पर वृक्ष के ऊपर मास्टर बीजरूप स्थिति में स्थित हो जाओ। बीज है ही -बिंदु। सारा ज्ञान, गुण, शक्तियां सबका सिंधु एक बिंदु में समा जाता है। इसको ही कहा जाता है- बाप समान स्थिति।

एक परमात्मा को याद करें

जीवन में आने वाली नकरात्मकता उतना महत्व नहीं रखती जितना महत्व हमारी खुशी के पैमाने का होता है। भक्तों का भी रक्षक भगवान अपने सभी बच्चों से कहते हैं बच्चे! मौत तो सबके सिर पर खड़ा है । इसलिए अब यह एक जन्म पवित्र बनो और बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। परमात्मा बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। और कोई रास्ता नहीं है - पतित से पावन बनने का। इस सृष्टि रंगमंच पर कर्मों का बहुत सूक्ष्म खेल चलता है, जिसे हर आत्मा पूरी तरह समझ नहीं पाती है जिस कारण वह अपना हिसाब-किताब बना लेती है। फिर उसे ही चुक्तु करना पड़ता है। जब हम किसी भी कर्मेन्द्रिय का प्रयोग करते हैं अर्थात् आँख द्वारा कुदृष्टि होती है, तो वो भी पाप कर्म बन जाता है। जबकि यह संकल्पों द्वारा किया गया पाप कर्म है जो कि योग द्वारा ही चुक्तु किया जा सकता है।

बोल के द्वारा किया गया पाप

जब आप किसी भी विकारों में फंसी हुई कमज़ोर परवश आत्मा को कुछ ऐसी बात बोलते हो जो उसे चुभ जाए अर्थात् वह दुःखी हो जाए तो वह आपका हिसाब-किताब बनता है, जिसको आपको शरीर द्वारा चुक्तु करना पड़ता है। इसलिए बाबा कहते हैं, बच्चे अब मुख द्वारा बोलना बन्द करो। अब ज़रूरत का ही बोलो। देखो बच्चे, कमज़ोर आत्मा तो पहले से ही अपने संस्कारों से परेशान है और वह उसे खत्म करना चाहती है और यदि आप भी सभी के बीच हल्की-सी भी कोई चुभती बात बोल देते हो तो वह एक बार दुःखी हो जाती है जोकि आपका हिसाब-किताब बन जाता है। इसलिए किसी आत्मा के शुभचिन्तक बन समझानी देनी भी हैं तो अकेले में बस एक ही बार दो। फिर उसे बाप हवाले कर दो अन्यथा आप छोटा-छोटा सा हिसाब-किताब बना लेते हो जो फिर चुक्तु भी तो करना पड़ेगा। अब जो समय जा रहा है वह केवल कमाई का है इसलिए अब नया हिसाब-किताब बनाना बन्द करो और हर आत्मा के प्रति रहम, प्रेम और कल्याण की भावना रख मन्सा सेवा करो। इससे आपका दुआओं का खाता जमा होगा और आप जल्दी ही अपनी मंज़िल पर पहुंच जाओगे। जब कोई भी पाप कर्म संकल्पों द्वारा होता है तो वह योग द्वारा चुक्तु हो जाता है और यदि कर्मणा में आ जाता है तो शरीर द्वारा और सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा चुक्तू करना पड़ता है।

1971 में पहली बार अव्यक्त मुरली में मैंने सुना कि बाबा ने याद दिलाया कि तुम भक्ति में कहते थे हे! भगवान जब तुम इस धरा पर आओ तो हमें अपना बना लेना। बाबा ने कहा कि इतना ही कहते थे न तुम बस। हमने तो कभी कहा भी नहीं था, क्योंकि हमने कभी भक्ति की नहीं थी। कहते होंगे भी भक्त लोग ऐसे। बाबा ने कहा देखो बाप ने क्या कर दिया। जो तुमने कहा था वह तो पूरा कर ही दिया कि मैंने तुम्हें अपना बना लिया। इसके साथ-साथ मैं भी तुम्हारा हो गया हूं। तो वह पहला दिन था मेरे जीवन का जब मुझे ये नशा मुझे चढ़ा कि भगवान मेरा। ये तो किसी को कहना भी नहीं आता दुनिया में कितनी बड़ी चीज है। जो भाग्यविधाता है, वह मेरा है। आप सबने सुना होगा बाबा की मुरली में यदि कभी किसी को ऐसा लगे कि मेरा भाग्य मुझे साथ नहीं दे रहा है तो ये याद करें

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Sep. 2025
» प्रकाशक व मुद्रक: करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » संपादक: बीके कोमल » संयुक्त संपादक: बीके पुष्पेन्द्र